गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 207
दि. 28.11.2025,
शुक्रवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH Regd. Office: TF-01, Nanakram Super Market,Ramnagar,Sabarmati, Ahmedabad-380 005. Gujarat, India.

Phone : 90163 33307 (M) 93283 33307, 98253 33307 • Email : garvigujarat2007@gmail.com • Email : garvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in

गुजरात की सड़क परियोजनाओं को केंद्र का बड़ा प्रोत्साहन, ₹20,000 करोड़ मंजूर

(जीएनएस)। गांधीनगर/सूरत। गुजरात में सड़क विकास और हाइवे सुधार की दिशा में केंद्र सरकार ने एक बड़ा कदम उठाया है। केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी अपने दो दिवसीय दौरे पर बुधवार से प्रदेश में मौजूद हैं और उन्होंने गुजरात के हाईवे और एक्सप्रेस-वे प्रोजेक्ट्स का गहन निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने घोषणा की कि केंद्र सरकार राज्य में सड़क मरम्मत, चौड़ीकरण और नई परियोजनाओं के लिए कुल 20,000 करोड़ की मंजूरी दे रही है, जो गुजरात के हाईवे विकास को नई ऊर्जा देगा। सूरत पहुंचते ही गडकरी ने जमीनी हकीकत जानने के लिए बस में बैठकर सड़क मार्गों का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने सड़क की सतह, मजबूती और गुणवत्ता का प्रत्यक्ष अनुभव लिया। उनके साथ एनएचएआई के अधिकारी और तकनीकी विशेषज्ञ भी मौजूद रहे। गडकरी ने कहा कि कार्यालयों में बैठकर लिए गए निर्णय सड़क पर मौजूद वास्तविक समस्याओं को नहीं दिखा पाते, इसलिए वह सीधे सड़क मार्गों का दौरा

कर यात्रियों और वाहन चालकों की परेशानियों को समझना चाहते हैं।

गडकरी ने सूरत सहित दक्षिण गुजरात के मुख्य हाइवे, विशेषकर एनएच-48 और दिल्ली–मुंबई एक्सप्रेस-वे के इंटरचेंज की डिजाइन और ट्रैफिक प्रबंधन की समीक्षा भी की। स्थानीय लोगों की शिकायतों के मुताबिक इन इंटरचेंजों में डिज़ाइन संबंधी कमियों के कारण अक्सर लंबे ट्रैफिक जाम बन जाते हैं। केंद्रीय मंत्री ने मौके पर अधिकारियों के साथ मिलकर इन समस्याओं का समाधान निकालने की प्रक्रिया शुरू की।

दौरे से पहले गांधीनगर में मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल और विभागीय अधिकारियों से हुई बैठक में राज्य के हाइवे पर वाहन भार में 35 प्रतिशत की बढ़ोतरी का जिक्र किया गया और बताया गया कि इससे सड़क की मरम्मत और विस्तार आवश्यक हो गया है। मुख्यमंत्री ने अहमदाबाद–मुंबई, राजकोट–गोंडल–जेतपुर और अहमदाबाद–उदयपुर मार्गों पर तेजी से कार्य पूरा करने का अनुरोध किया। इस पर गडकरी ने आश्वासन दिया कि एनएचएआई के तहत राज्य को 20,000 करोड़ की नई मंजूरी दी जाएगी, जिससे प्रमुख हाइवे और एक्सप्रेस-वे प्रोजेक्ट्स में तेजी आएगी और सड़क नेटवर्क और सुरक्षित बन सकेगा।

गडकरी ने कहा कि उनका दौरा केवल निरीक्षण का नहीं है, बल्कि परियोजनाओं में आ रही बाधाओं को तुरंत दूर करने का अवसर भी है। उन्होंने स्थानीय लोगों और वाहन चालकों से संवाद किया और उनकी समस्याओं को रिकॉर्ड कर अधिकारियों को समाधान के लिए निर्देशित किया। विशेषज्ञों का मानना है कि इस धनराशि से गुजरात के हाईवे और राष्ट्रीय राजमार्गों में व्यापक सुधार होगा, जिससे राज्य की सड़क यातायात प्रणाली आधुनिक और सुरक्षित बनेगी और व्यापारिक तथा पर्यटन गतिविधियों को भी गति मिलेगी।

गुजरात में सड़क परियोजनाओं को मिली यह मंजूरी प्रदेश की विकास दिशा में मील का पत्थर साबित हो सकती है, क्योंकि इससे सड़क क्षमता बढ़ेगी, ट्रैफिक जाम कम होंगे और सड़क सुरक्षा में सुधार होगा। एनएचएआई की योजना है कि आने वाले महीनों में इन परियोजनाओं के लिए विस्तृत कार्ययोजना बनाई जाए और 20,000 करोड़ के निवेश का उपयोग तत्काल प्रभाव से शुरू कर दिया जाए।

व्हाइट हाउस के साये में गोलियों की गूंज और राजधानी की दहशतभरी दोपहर की लंबी दास्तान

(जीएनएस)। वाशिंगटन की वह दोपहर जैसे किसी अनहोनी का संकेत लेकर आई थी। शहर के दिल में धड़कता व्हाइट हाउस, जहां आमतौर पर सुरक्षा का घेरा इतना मजबूत होता है कि हवा भी दस्तक देकर गुजरती है, अचानक गोलियों की आवाज से कांप उठा। 17वीं स्ट्रीट और एच स्ट्रीट के मोड़ पर भीड़ सामान्य थी, गाड़ियाँ अपने तय रफ्तार से गुजर रही थीं और पर्यटक दूर से राष्ट्रपति भवन की झलकें कैमरे में कैद करने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन उसी सामान्यता को चीरते हुए अचानक फायरिंग की आवाज गूंजी, जैसे किसी ने दोपहर की खामोशी को बरछी से चीर दिया हो।

इन गोलियों का निशाना थे वेस्ट वर्जीनिया नेशनल गार्ड के दो जवान, जो राजधानी में पहले से बढ़े सुरक्षा अभियानों का हिस्सा थे। हमले की तीव्रता ऐसी थी कि कुछ ही क्षणों में दोनों जमीन पर गिर पड़े, उनका खून सड़क की धूल में घुलने लगा और आसपास का क्षेत्र अफरा-तफरी में डूब गया। राहगीरों में चीख-पुकार मच गई, कई लोग इमारतों के पीछे छिपने लगे, जबकि पुलिस की पहली टुकड़ी पहुंचने से पहले ही हमला कर चुके हाथ हवा में गुम हो चुके थे।

लेकिन यह हमला यूँ ही अंधाधुंध नहीं था; पुलिस सूत्रों के मुताबिक हमला घात

लगाकर किया गया था, मानो किसी ने मौके का इंतजार बड़ी धैर्यपूर्ण साजिश के साथ किया हो। घटना की सूचना मिलते ही वाशिंगटन पुलिस ने इलाके को घेर लिया और तलाशी शुरू की। कुछ ही देर बाद 29 वर्षीय रहमानुल्लाह लकनवाल नामक अफगान मूल के व्यक्ति को दबोच लिया गया — वह 2021 में अमेरिका आया था और अब उस पर राजधानी की सुरक्षा को चुनौती देने का आरोप था। गिरफ्तारी के साथ ही माहौल में मौजूद तनाव और अधिक गहरा हो गया, क्योंकि यह सवाल हवा में तैरने लगा कि आखिर ऐसे हमलों का मकसद क्या है और कौन-सी गहरी परतें अभी उजागर होनी बाकी हैं।

व्हाइट हाउस पर इसकी गूंज इतनी जोरदार थी कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को खबर मिलते ही अपनी प्रतिक्रिया देनी पड़ी, हालांकि उस समय वे वेस्ट पाम बीच स्थित अपने गोल्फ कोर्स पर थे। उन्होंने ट्रुथ सोशल पर लिखा कि हमलावर "गंभीर नतीजे भुगतेगा", एक ऐसा बयान जिसने राजनीतिक तापमान को और तेज कर दिया। उनकी यह प्रतिक्रिया उस समय आई जब एफबीआई निदेशक काश पटेल यह पुष्टि कर रहे थे कि दोनों घायल जवानों की हालत बेहद गंभीर है और डॉक्टर उनकी जिंदगी बचाने की लड़ाई लड़ रहे हैं।

घटनाओं का सिलसिला इतना तेज था कि वेस्ट वर्जीनिया के गवर्नर पैट्रिक मॉरिसी ने तत्काल बयान जारी कर घायल जवानों को मृत घोषित कर दिया, लेकिन थोड़ी ही देर बाद अधिकारियों ने यह जानकारी गलत बताते हुए उसे सुधार दिया। यह अफरा-तफरी सिर्फ सड़क पर ही नहीं, प्रशासनिक गलियारों में भी फैल चुकी थी। युद्ध सचिव पीट हेगसेथ ने बताया कि राष्ट्रपति ने राजधानी की सुरक्षा को और कड़ा करने के लिए अतिरिक्त 500 नेशनल गार्ड जवान भेजने का आदेश दिया है। राजधानी को पहले ही अगस्त में आपातकालीन स्थिति के दौरान हजारों जवानों से भर दिया गया था, लेकिन व्हाइट हाउस से बस दो ब्लॉक दूर हुई इस घटना ने सारे इंतजामों की पोल खोलकर रख दी।

वाशिंगटन डीसी कई दशकों से राजनीतिक तनाव, विरोध प्रदर्शनों और सुरक्षा चुनौतियों का केंद्र रहा है, लेकिन सुरक्षा एजेंसियों ने कभी यह नहीं सोचा था कि इस तरह का हमला इतनी नजदीकी पर हो सकता है। इस घटना ने सुरक्षा ढांचे को झकझोर दिया — लोग सवाल पूछने लगे कि इतने सख्त सुरक्षा चक्र के भीतर आखिर दरार कहाँ थी, और कैसे एक हमलावर उस घेरे तक पहुँच गया जिसे दुनिया की सबसे सुरक्षित जगहों में से एक माना जाता है।

अस्पताल के बाहर उस शाम सायरनों की आवाज, तेज चलती एम्बुलेंसें, और रिपोर्टरों की भारी भीड़ यह संकेत दे रही थी कि यह मामला सिर्फ एक हिंसक घटना नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा गंभीर सवाल बन चुका है।

हांगकांग की काली रात: आठ इमारतों को निगल गई आग, 44 मौतों ने शहर को दहला दिया

(जीएनएस)। हांगकांग की वह रात सामान्य नहीं थी। ताई पो के वांग फुक कोर्ट इलाके में लोग रोज़ की तरह अपने घरों में चैन से सोए हुए थे। बच्चों के कमरे में धीमी रोशनी जल रही थी, बुज़ुर्ग अपने बिस्तरों पर लेटे हुए किसी बीती स्मृति में खोए होंगे, और कामकाजी लोग थके शरीर के साथ गहरी नींद में होंगे। लेकिन आधी रात के उस शांत क्षण में अचानक आसमान को चीरती एक तेज़ चीख उठी—और उसी के साथ प्रकट हुई आग की लपटें, जो देखते ही देखते दानव की तरह इमारतों पर टूट पड़ीं। सबकुछ इतना तीव्र, इतना तेज, इतना अनियंत्रित था कि किसी को समझने का अवसर ही नहीं मिला कि आखिर यह सब हुआ कैसे। एक इमारत की खिड़कियों से उठती चमक कुछ ही मिनटों में पड़ोसी इमारतों तक फैल गई। आग की दानवी जीभें आठ ऊँची आवासीय इमारतों पर टूट पड़ीं, और हवा में फैली राख व धुएँ ने पूरे इलाके को एक ऐसे धुंधले अंधकार से भर दिया, जिसमें सिर्फ चीखें, खाँसी और भय ही सुनाई दे रहा था।

बुधवार सुबह जब बचाव दलों ने अपने प्रयास जारी रखे, तब तक मृत्यु का आंकड़ा 44 तक पहुँच चुका था। इतनी बड़ी संख्या में मृतकों की पुष्टि ने पूरे शहर को एक सन्नाटे में डाल दिया—न कोई सड़क पर

बोला, न किसी घर में आवाज़ उठी। हर चेहरा एक ही प्रश्न पूछ रहा था—ऐसा कैसे हो गया?

दमकल विभाग ने बताया कि तीन इमारतों में आग अभी भी सुलग रही है, जबकि चार में स्थिति नियंत्रण में है। एक इमारत दुर्घटना से बच गई—लेकिन उसके निवासियों की आँखों में आग की परछाइयाँ अब भी काँप रही थीं। सैकड़ों परिवार इमारतों से निकलकर खुले मैदान में खड़े थे—कुछ रो रहे थे, कुछ अपने प्रियजनों का नाम पुकार रहे थे, और कुछ सिर्फ आसमान की ओर देख रहे थे, मानो किसी अदृश्य शक्ति से उत्तर माँग रहे हों।

दमकल कर्मियों ने रातभर मौत से लड़ाई लड़ी।

उप निदेशक चान हिंग-युंग ने बताया कि उनकी टीमों ने 13वीं से तीसरी मंजिल के बीच फँसे लोगों को सुरक्षित निकालने के लिए अनगिनत बार अपनी जान जोखिम में डाली। जिन मंजिलों पर आग ने सबसे भयावह रूप दिखाया, वे थीं पाँचवीं से अठारहवीं। जैसे आग ने अपनी सबसे तीखी लपटें उन्हीं जगहों पर केंद्रित कर दी थीं। लगभग 100 लोगों को बचाया गया, लेकिन उनमें से 40 लोगों को समय पर कोई सहायता नहीं मिल सकी—वे आग और धुएँ की चोट से वहीं जीवन को अलविदा कह गए। चार और लोग अस्पताल पहुँचते-पहुँचते दम तोड़ बैठे।

सात दमकलकर्मी भी झुलस गए।

उनके शरीर पर जले कपड़े और त्वचा पर उठ आए छाले बताते थे कि वे भी मौत के रास्ते से होकर वापस लौटे हैं।

न्यू टेरिटरीज के अस्पतालों में हलचल का माहौल था।

अलर्ट जारी होते ही डॉक्टरों और नर्सों ने बिना विश्राम के काम शुरू कर दिया और सुबह तीन बजे तक 48 घायलों को भर्ती कर लिया गया, जिनमें से सात की हालत नाजुक बनी हुई थी। स्वास्थ्य सचिव लो चुंग-माऊ ने बताया कि कई मौतें आग से नहीं, बल्कि धुएँ से दम घुटने के कारण हुईं—धुआँ इतना घना और जहरीला था कि कुछ ही साँसों में इंसान गिर पड़े।

रात 1:26 बजे सरकार की ओर से मुख्य कार्यकारी जॉन ली का-चिऊ का बयान आया—उन्होंने कहा कि वे राहत अभियान पर नजर बनाए हुए हैं और सबसे महत्वपूर्ण है आग पर नियंत्रण, लोगों को बाहर निकालना और घायलों का तत्काल उपचार।

लेकिन इस त्रासदी का एक और चेहरा भी था—लापरवाही और अपराध।

जाँच आगे बढ़ते ही पता चला कि यह सिर्फ एक दुर्घटना नहीं लगती। निर्माण कंपनी के दो निदेशकों और एक सलाहकार अभियंता को गैर-इरादतन हत्या के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस की प्रारंभिक जांच यह संकेत दे रही थी कि संभवतः भवन निर्माण या सुरक्षा नियमों में भारी लापरवाही बरती गई थी।

हिमाचल में बढ़ी ठंड, पेयजल की पाइपलाइनें जमने लगीं, सड़क यातायात प्रभावित

(जीएनएस)। शिमला। हिमाचल प्रदेश में इस साल की सबसे कड़ाकेदार ठंड लोगों के जीवन को पहले से अधिक प्रभावित करने लगी है। प्रदेश के मैदानी और निचले इलाकों में गुरुवार सुबह से घना कोहरा छाया रहा, जिससे दृश्यता अत्यंत कम हो गई और यातायात धीमा पड़ गया। सुंदरनगर में दृश्यता मात्र 70 मीटर, जबकि बिलासपुर और मंडी में 150 मीटर दर्ज की गई। लाहौल-स्पीति जैसे उच्च पर्वतीय क्षेत्रों में पारा शून्य से कई डिग्री नीचे चला गया है, जिससे वहां का मौसम अत्यधिक सख्त हो गया है। ताबो में तापमान −7.3 डिग्री, कुकुमसेरी में −5.7 डिग्री, कल्पा में 0.4 डिग्री, मनाली में 1.7 डिग्री, भुंतर में 1.8 डिग्री और सियोबाग में 1.2 डिग्री दर्ज किया गया। इस चरम ठंड की वजह से पेयजल की पाइपलाइनें जमने लगी हैं, जिससे कई इलाकों में घरों तक पानी की आपूर्ति बाधित हो गई है। सुबह-सुबह और शाम के समय घरों से बाहर निकलना मुश्किल हो गया है। स्थानीय लोग हीटर और गर्म कपड़ों का सहारा ले रहे हैं, जबकि कुछ क्षेत्रों में लोग खुली आग और गर्म पानी का उपयोग करके अपने घरों को गर्म रखने की कोशिश कर रहे हैं। मौसम विभाग ने बिलासपुर और मंडी में 28 और 29 नवंबर के लिए घने कोहरे का येलो अलर्ट जारी किया है। विभाग के अनुसार राज्य में औसत न्यूनतम तापमान सामान्य से एक डिग्री कम है और पिछले 24 घंटों में इसमें 0.4 डिग्री की गिरावट दर्ज

की गई। इस महीने में बारिश लगभग नहीं होने से सूखी ठंड ने लोगों के जीवन पर और असर डाला है। कुफ़री, नारकंडा और मनाली जैसे लोकप्रिय पर्यटन स्थलों में पर्यटक ठिठुर रहे हैं। शिमला में भी सुबह और शाम का तापमान तेजी से गिर रहा है और लोग तापमान से बचने के लिए हीटर, कम्बल और गर्म कपड़े इस्तेमाल कर रहे हैं। स्वास्थ्य विभाग ने विशेष रूप से बुजुर्गों और बच्चों को ठंड से बचाव के लिए सतर्क रहने की सलाह दी है। वहीं, पुलिस ने कोहरे के कारण सड़क दुर्घटनाओं की आशंका जताते हुए वाहन चालकों से धीमी गति बनाए रखने और फॉग लाइट का उपयोग करने की अपील की है। मौसम विज्ञान केंद्र ने बताया कि पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय न होने के कारण अगले एक सप्ताह तक हिमाचल प्रदेश में बारिश या बर्फबारी की संभावना नहीं है। दिन के समय धूप खिली रहेगी, लेकिन सुबह और शाम ठंड और कोहरे से राहत मिलने की संभावना बेहद कम है। बीते साल आठ दिसंबर, 24 दिसंबर और 25-26 दिसंबर को प्रदेश के कई हिस्सों में भारी बर्फबारी हुई थी, जो लोगों के लिए परेशानी का कारण बनी थी। राज्य के प्रमुख शहरों का न्यूनतम तापमान इस प्रकार दर्ज किया गया: सुंदरनगर 2.9, पालमपुर 4.0, नारकंडा 4.5, हमीरपुर 5.1, मंडी 5.2, कांगड़ा 5.5, शिमला 6.0, बिलासपुर 7.5, कसौली 8.1, नाहन 9.6, पांवटा साहब 11.0। इस ठंड के बीच लोगों से आग्रह किया गया है कि वे सुरक्षित रहें और ठंड से बचाव के पर्याप्त उपाय अपनाएं।

फिरोजपुर हत्याकांड में बड़ा मोड़: मुठभेड़ में मुख्य आरोपी मारा गया, गोलीबारी में कांस्टेबल घायल

(जीएनएस)। पंजाब के फिरोजपुर में आरएसएस कार्यकर्ता नवीन अरोड़ा की हत्या के मामले में मंगलवार देर रात घटनाक्रम ने अचानक वह मोड़ लिया जिसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। पुलिस की गिरफ्त में मौजूद मुख्य आरोपी बादल को जब जांच टीम हथियारों की बरामदगी के लिए शमशान घाट के पास ले जा रही थी, तभी अंधेरे और सन्नाटे से घिरी उस जगह पर अचानक गोलियों की गूंज उठी। यह हमला कहीं बाहर से नहीं, बल्कि उसी गिरोह के सदस्यों की ओर से किया गया था, जिनके साथ मिलकर बादल ने हत्या की साजिश रची थी।

पुलिस अधिकारियों के अनुसार, फायरिंग इतनी तीव्र और अचानक थी कि टीम को तत्काल मोर्चा संभालना पड़ा। डीआईजी एचएस गिल के मुताबिक, दोपहर तक इस मामले में कनव और बादल को गिरफ्तार किया जा चुका था, और रिकवरी के लिए उन्हें मौके पर ले जाया जा रहा था। लेकिन जैसे ही टीम शमशान घाट के पास पहुँची, घात लगाए बैठे उनके साथी ताबड़तोड़ गोलियाँ चलाने लगे। इस अप्रत्याशित हमले में पंजाब पुलिस के हेड कांस्टेबल बलौर सिंह गंभीर रूप से घायल हो गए।

घटनास्थल पर अराजकता का माहौल था—धूल, धुआँ और लगातार गूंजती गोलियाँ। पुलिस और हमलावरों के बीच हुई इस मुठभेड़ के बीच ही एक ऐसा पल आया जिसने पूरी स्थिति को उलट दिया। आरोपी बादल, जिसे

पुलिस हथकड़ी लगे हुए लिए खड़ी थी, अपने ही साथियों की चलाई गोली का निशाना बन गया। गोली उसके सीने के आर-पार चली गई और वह घटनास्थल पर ही ढेर होकर गिर पड़ा। पुलिस के अनुसार, यह उसी गिरोह का हमला था जिसने 15 नवंबर को आरएसएस कार्यकर्ता नवीन अरोड़ा की हत्या की थी। उनकी योजना संभवतः बादल को छुड़ाने या पुलिस टीम को नुकसान पहुँचाने की थी, परन्तु उनका ही साथी उसी हमले में मौत के घाट उतर गया।

कांस्टेबल बलौर सिंह को तत्काल अस्पताल पहुँचाया गया, जहाँ डॉक्टरों ने बताया कि उनकी हालत फिलहाल स्थिर है, हालांकि खतरे से बाहर नहीं कहा जा सकता। जिला पुलिस ने इलाके की नाकेबंदी कर दी है और फरार हमलावरों की तलाश के लिए विशेष अभियान शुरू किया गया है।

मुठभेड़ की खबर पूरे क्षेत्र में तेज़ी से फैल गई। फिरोजपुर से लेकर फाजिल्का तक लोग यह समझने की कोशिश कर रहे हैं कि आखिर अपराधियों का यह नेटवर्क कितना गहरा और संगठित है, जो न सिर्फ हत्या करता है बल्कि अपने गिरफ्तार साथियों को छुड़ाने के लिए पुलिस पर गोलियाँ चलाने से भी नहीं हिचकता।

जांच एजेंसियाँ अब इस पूरे गिरोह की गतिविधियों, हथियारों की सप्लाई चेन और हत्या की पृष्ठभूमि की तह तक जाने की तैयारी कर चुकी हैं। पुलिस अधिकारियों ने आश्वासन दिया है कि इस मामले से जुड़े सभी अपराधियों को जल्द गिरफ्तार किया जाएगा और किसी को भी कानून से बचने नहीं दिया जाएगा। रात की इस मुठभेड़ ने न सिर्फ एक आरोपी की जान ली, बल्कि यह भी स्पष्ट कर दिया कि अपराध की जड़ें कितनी गहरी हो चुकी हैं—और कानून-व्यवस्था को उन्हें उखाड़ फेंकने के लिए कितनी तैयारियों की जरूरत है।

वेस्टर्न रेलवे द्वारा साबरमती ⇌ पटना के बीच फेस्टिवल स्पेशल ट्रेन चलाइ जाएगी

ट्रेन क्र.	प्रस्थान स्टेशन और गंतव्य	सेवा की तिथियाँ	प्रस्थान	आगमन
09427	साबरमती - पटना	01.10.2025 से 26.11.2025	18:10 बजे (बुधवार)	01:00 बजे (शुक्रवार)
09428	पटना - साबरमती	03.10.2025 से 28.11.2025	04:40 बजे (शुक्रवार)	09:55 बजे (दूसरे दिन)

होल्ट: महेसाणा, पालनपुर, आबू रोड, मारवाड़ जंक्शन, अजमेर, जयपुर, गांधीनगर जयपुर, दौसा, भरतपुर जंक्शन, अछनेरा, ईदगाह आगरा, टूंडला, इटावा, कानपुर सेंट्रल, प्रयागराज, मिर्ज़ापुर, पं. दीन दयाल उपाध्याय जंक्शन, बक्सर, आरा और दानापुर स्टेशन दोनों दिशाओं में।

कंपोजिशन: AC 3-टियर कोच।

समय, ठहराव और संरचना के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए, यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जा सकते हैं।

ट्रेन नंबर 09427 के लिए बुकिंग 28.09.2025 से सभी PRS काउंटर और IRCTC वेबसाइट पर शुरू होगी। ऊपर बताई गई ट्रेन स्पेशल ट्रेन के तौर पर स्पेशल किराए पर चलाइ जाएगी।

पश्चिम रेलवे
wr.indianrailways.gov.in
हमें लाइक करें: facebook.com/WesternRly
हमें फॉलो करें: X.com/WesternRly
हमें फॉलो करें: Instagram/WesternRly

संपादकीय

विश्व विजेता बेटियां

रविवार को भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने वो इतिहास रचा, जिसका दो दशक से इंतजार था। एक दिवसीय क्रिकेट का वर्ल्ड कप जीतकर उन्होंने उस कमी को पूरा किया, जो साल 2005 और 2017 में फाइनल में पहुंचकर भी हासिल न हो सकी थी। ऐसे वक्त में जब भारतीय महिला क्रिकेट टीम को खिताबी दौड़ में कमजोर माना जा रहा था, उसने सात बार की चैंपियन आस्ट्रेलिया टीम को सेमीफाइनल के एक रोमांचक मुकाबले में हरा दिया था। मुकाबले में मुंबई की जेमिमा रॉड्रिग्स ने 127 रन की तूफानी यादगार पारी खेली। लगता था शुरुआत में कई मैच हारने वाली भारतीय महिला टीम ने अपनी ऊर्जा फाइनल मुकाबले के लिये बचा रखी थी, जिसमें उन्होंने दक्षिण अफ्रीका की टीम को 52 रन से हरा दिया। रविवार की रात हरमनप्रीत कौर की कप्तानी ने पासा ही पलट दिया। फिर उनकी टीम ने नवी मुंबई के डीवाई पाटिल स्टेडियम में चालीस हजार से ज्यादा दर्शकों के बीच जीत का जश्न जमकर मनाया। इस जुनूनी जश्न की वे हकदार भी थीं। साथ ही देश के एक अरब चालीस करोड़ लोगों को भी जीत के जश्न में डुबो दिया। लोग इस साल होने वाले कई दुखांत घटनाक्रमों को भुला इस जीत की लय में झूम उठे। यह सुखद आश्चर्य ही था कि टीम ने लगातार तीन हार झेलने के बाद टूर्नामेंट में दमदार वापसी की। सेमीफाइनल में लोग सात बार की चैंपियन आस्ट्रेलिया के खिलाफ भारतीय टीम को कमतर आंक रहे थे। सुखद आश्चर्य देखिये कि फाइनल मुकाबले में हरियाणा की उस शैफाली वर्मा ने करिश्माई पारी खेली, जो विश्व कप के शुरू होने से पहले टीम का हिस्सा भी नहीं थी। उसने अपने चयन को तार्किक साबित किया। इसी तरह दीप्ति शर्मा ने भी शानदार खेल का परिचय दिया। निश्चय ही महिला क्रिकेट टीम की यह शानदार जीत देश की उन लाखों बेटियों के सपनों को नयी ऊंचाइयां देगी, जो अपना आसमान हासिल करना चाहती हैं।

निस्संदेह, विश्वकप में भारतीय महिला क्रिकेट टीम की शानदार जीत के दूरगामी परिणाम होंगे। इस खेल में टीम दीर्घकालिक वर्चस्व कायम रख सकती है। दरअसल, अब तक महिला क्रिकेट को दोयम दर्जे का माना जाता रहा है। दरअसल, जब से महिला खिलाड़ियों को पुरुष खिलाड़ियों के समान वेतन मिलने लगा और उन्हें आईपीएल-शैली की टी-20 लीग में दमखम दिखाने का मौका मिला, टीम के प्रदर्शन में अभूतपूर्व सुधार आया। धीरे-धीरे वे पुरुष क्रिकेट के सितारों की तरह आभा बिखेरने लगी। हालांकि, आगे की राह इतनी भी आसान नहीं है, उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ेगा। फिलहाल उनके पास इस कामयाबी का जश्न मनाने का मौका है। उल्लेखनीय है कि टीम में कई ऐसी खिलाड़ी हैं जिन्होंने तमाम आर्थिक-सामाजिक चुनौतियों का मुकाबला करके अपनी जगह बनायी। वे तपती पगडंडियों से गुजरने वाली बेटियों के लिये प्रेरणास्रोत हैं। इन खिलाड़ियों ने मैदान से पहले निजी जीवन में बड़ा संघर्ष किया। बेहद जटिल पृष्ठभूमि से आने के बावजूद वे विश्व विजेता टीम का हिस्सा बनी हैं। उनके साथ अभ्यास मैच खेलने के लिये लड़कियां नहीं होती थी, अतः वे शुरुआती क्रिकेट लड़कों की टीम के साथ खेलती थीं। उनके माता-पिता को समाज की छींटाकशी का भी शिकार होना पड़ता था। मध्यप्रदेश की क्रांति गौड़ ने आर्थिक बदहाली का जीवन जिया और प्रैक्टिस मैच के लिये पैसे की मदद न मिलने पर मां ने गहने तक बेचने पड़े। वक्त बदला है और आज मध्य प्रदेश सरकार ने उसे एक करोड़ का पुरस्कार देने की घोषणा की है। स्पिनर राधा यादव का परिवार मुंबई के कांदिवली में रहता है और उसके पिता सब्जी बेचते रहे हैं। उनकी प्रतिभा पहचानकर क्रिकेटर प्रफुल्ल नाइक ने उसके परिजनों को क्रिकेट खेलने के लिये मनाया। संगरूर जिले की रहने वाली सफल गेंदबाज अमनजोत के, पेशे से कारपेंटर पिता भूपेंदर सिंह ने उनकी प्रतिभा को पहचाना। उन्होंने अपना कामधंधा दांव पर लगाया। इसी तरह हिमाचल के एक किसान परिवार से आने वाली तेज गेंदबाज रेणुका ठाकुर ने अपने दिवंगत पिता के सपने को पूरा किया। निस्संदेह, इन लड़कियों की कामयाबी न केवल समाज में लड़कियों के प्रति नजरिया बदलेगी, बल्कि उन जैसी लाखों लड़कियों को क्रिकेट में भविष्य आजमाने के लिये भी प्रेरित करेगी।

मुस्लिम वोट के लिए ममता का एसआईआर पर विरोध

> “ पश्चिम बंगाल के 294 सीट के लिए मार्च-अप्रैल 2026 को विधानसभा चुनाव होना है। यह चुनाव राजनीतिक दृष्टिकोण से बेहद अहम माना जा रहा है। इस चुनाव को राज्य की सत्ता पर दोबारा कब्जा जमाने की कोशिश कर रही सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) और विपक्षी दलों के लिए एक निर्णायक युद्ध के रूप में देखा जा रहा है।

बिहार में राजद—कांग्रेस विपक्षी महागठबंधन की करारी शिकस्त के बाद पश्चिमी बंगाल में वर्ष 2026 में होने वाले विधानसभा चुनाव के लिए चौसर बिछ गई है। इस चौसर पर तृणमूल कांग्रेस की सुप्रीमो और पश्चिमी बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी कोई भी दाव हाथ से नहीं देना चाहती हैं। यही वजह है कि ममता बनर्जी एसआइआर का जम कर विरोध कर रही है। इस विरोध की जड़ में छिपा हुआ है ममता का मुस्लिम वोट बैंक प्रेम। ममता एक तरफ अवैध बांग्लादेशियों और रोहिंग्या शरणार्थियों को बसाने का पुरजोर समर्थन करती रही हैं। ममता का प्रयास है कि भाजपा उत्तर भारत के राज्यों की तरह पश्चिम बंगाल में वोटों का ध्रवीकरण नहीं कर पाए। इसलिए ममता मुस्लिम वोट बैंक के खिसके बगैर हिन्दू वोट बैंक को भी साधने की फिराक में है।पश्चिम बंगाल के 294 सीट के लिए मार्च-अप्रैल 2026 को विधानसभा चुनाव होना है। यह चुनाव राजनीतिक दृष्टिकोण से बेहद अहम माना जा रहा है। इस चुनाव को राज्य की सत्ता पर दोबारा कब्जा जमाने की कोशिश कर रही सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) और विपक्षी दलों के लिए एक निर्णायक युद्ध के रूप में देखा जा रहा है। मौजूदा मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के नेतृत्व में टीएमसी जहां लगातार तीसरी बार सरकार बनाने का लक्ष्य लेकर चल रही है, वहीं भाजपा, वाम दल और कांग्रेस भी नए गठबंधनों और रणनीतियों के साथ मैदान में उतरने की तैयारी कर रहे हैं। यही वजह है कि ममता एसआइआर को विरोध का राजनीतिक हथियार बना लिया है। पश्चिम बंगाल समेत देश के 12 राज्यों में जब से वोटर लिस्ट के एसआईआर करने की प्रक्रिया शुरू हुई

है। इसके बाद से पश्चिम बंगाल से अवैध रूप से बॉर्डर पार कर बांग्लादेश जाने वाले लोगों की तादाद बढ़ गई है।

इसे भी पढ़ें: SIR in West Bengal | 26 लाख वोटर गायब! पश्चिम बंगाल की मतदाता सूची पर चुवान आयोग का खुलासा, ममता बनर्जी ने उठाए सवाल

दोनों देशों में अवैध रूप से सीमापार करके आने-जाने का यह सिलसिला पहले घुसपैठियों के अलावा अधिकतर तस्करों के बीच होता था। लेकिन अब जिस तरह से भारत से बांग्लादेश जाने वालों की संख्या में बढ़ोतरी हो रही है। इसे घुसपैठियों का बांग्लादेश वापस लौटना माना जा रहा है। पिछले कुछ दिनों से पश्चिम बंगाल से लगते भारत-बांग्लादेश बॉर्डर पर हलचल तेज है। इसमें कुछ लोग पश्चिम बंगाल से बांग्लादेश जाने की कोशिश कर रहे हैं। जिसमें कुछ कामयाब भी हो रहे हैं। हालांकि, बॉर्डर पर चौकस बीएसएफ को देखकर ऐसे लोग जंगलों में भाग जाते हैं। लेकिन बीएसएफ की नजर में ऐसे कुछ मामले आ रहे हैं। जिनमें पश्चिम बंगाल में एसआईआर शुरू होने के बाद बांग्लादेश की तरफ जाने वालों की संख्या में बढ़ोतरी देखी जा रही है। बिहार के बाद चुनाव आयोग ने पश्चिम बंगाल समेत देश के 12 राज्यों में एसआईआर शुरू करने की प्रक्रिया चार नवंबर से शुरू की थी। चार दिसंबर तक वोटरों को एनुमरेशन फार्म बांटे जाने और वापस लिए जाने हैं।

आयोग का कहना है कि अभी तक पश्चिम बंगाल के कुल सात करोड़ 66 लाख से अधिक मतदाताओं में से सात करोड़ 63 लाख से अधिक वोटरों को एनुमरेशन फार्म बांटे जा चुके हैं। यह काम 99 फीसदी पूरा कर लिया गया है। अब भरे गए फार्म इकट्ठा करना शुरू किया जाएगा। तृणमूल कांग्रेस पश्चिम बंगाल में भारतीय चुनाव आयोग के स्पेशल इंवेस्टिगेटिव रिवीजन का लगातार विरोध कर रही है। इसी कड़ी में राज्य की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी नॉर्थ 24 परगना जिले के बनगांव में एसआईआर विरोधी रैली को संबोधित करेंगी। ममता बनर्जी रैली के बाद बनगांव में एक विरोध मार्च में भी हिस्सा लेंगी। ये दूसरी एसआईआर विरोधी रैली और विरोध मार्च होगा जिसका नेतृत्व ममता करेंगी। पहली रैली 4 नवंबर को कोलकाता में हुई थी।

जब—जब पश्चिम बंगाल में मुस्लिम वोट बैंक पर किसी तरह का संकट नजर आता है, ममता बनर्जी हमेशा उनके पक्ष में खड़ी नजर आती हैं। गौरतलब है कि पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ने कहा था कि बांग्लादेश में बढ़ती हिंसा को देखते हुए वह पड़ोसी देश से संकट में फंसे लोगों के लिए अपने राज्य के दरवाजे खुले रखेंगी और उन्हें आश्रय देंगी। बनर्जी ने शरणार्थियों पर संयुक्त राष्ट्र के प्रस्ताव का हवाला देते हुए कहा था कि पिछले कुछ दिनों में पड़ोसी देश में कानून-व्यवस्था की गंभीर स्थिति के कारण संभावित मानवीय संकट उत्पन्न हो सकता है। ममता बनर्जी के इस बयान पर बांग्लादेश की सरकार ने कड़ी आपत्ति जताई थी। बांग्लादेश ने इस मामले पर अपनी चिंता जताते हुए केंद्र सरकार को एक खत भेजा था। बांग्लादेश के विदेश मंत्री हसन महमूद ने कहा था कि 'पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री के प्रति पूरे सम्मान के साथ, जिनके साथ हमारे बहुत ही मधुर और घनिष्ठ संबंध हैं, हम यह साफ करना चाहते हैं कि उनकी टिप्पणियों में भ्रम पैदा करने की बहुत गुंजाइश है। इसलिए हमने भारत सरकार को एक खत भेजा है।

बांग्लादेशी ही नहीं बल्कि रोहिंग्या शरणार्थियों की भी मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने खुल कर पैरवी की। ममता ने कहा था कि रोहिंग्या शरणार्थियों को वापस नहीं भेजना चाहिए। ममता ने रोहिंग्या शरणार्थियों को वापस भेजने का किया विरोध किया था।

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ने केंद्र सरकार पर रोहिंग्या मुसलमानों को वापस भेजने के नाम पर परेशान करने का आरोप लगाया था। उन्होंने कहा था कि हर रोहिंग्या मुस्लिम आतंकी नहीं है। उन्हें वापस नहीं भेजना चाहिए। ममता का ये बयान केंद्र द्वारा ये कहने के बाद आया था कि रोहिंग्या मुसलमान भारत की सुरक्षा के लिए खतरा हैं, उनके संपर्क आईएस और लश्कर ए तैयबा जैसे आतंकी संगठनों से हैं। ममता ने कहा था, हम संयुक्त राष्ट्र के साथ हैं, जिसने अंतरराष्ट्रीय समुदाय से रोहिंग्या लोगों की मदद की अपील की है। हम इसका समर्थन करते हैं।

एसआईआर के बाद पश्चिम बंगाल में अवैध रूप से रह रहे बांग्लादेशी और रोहिंग्या शरणार्थियों में हडकंप मचा हुआ है। वे पहचान उजागर होने के डर से सीमा की तरफ भाग रहे हैं। यही वजह है कि ममता बनर्जी एसआईआर का जमकर विरोध कर रही हैं। इसी तरह का विरोध कांग्रेस और इंडिया गठबंधन के दूसरे घटक दलों ने भी बिहार में किया था। इसके बावजूद उन्हें हार का मुंह देखना पड़ा। ममता को डर है कि यदि एसआइआर का विरोध नहीं किया और अवैध शरणार्थियों में भगदड़ जारी रही तो इसका वोट बैंक पर इसका प्रतिकूल असर पड़ सकता है। यह पहला मौका नहीं है जब वोट बैंक की राजनीति के लिए राजनीतिक दल देश की एकता—अखंडता को नुकसान पहुंचाने वाले तत्वों की पैरवी कर रहे हैं। यह निश्चित है कि ऐसी हरकतों से बेशक चुनाव जीते जा सकते हो, किन्तु इसके दूरगामी परिणाम देश की बाहरी और आंतरिक सुरक्षा पर पड़ते हैं। बेहतर होगा कि नेता देश के बारे सोचे और ऐसे तत्वों पर कानूनी कार्रवाई की पहल करें, जिससे देश को किसी भी तरह का खतरा हो

प्रेरणा

शांत मन का उजाला

बेंजामिन फ्रैंकलिन युवावस्था में ऐसे थे जैसे किसी तूफ़ानी बादल में चमकती बिजली—तेज़, प्रभावशाली और जहाँ पड़ जाए वहाँ क्षण भर में रोशनी फैला दे। उनकी बुद्धि अत्यंत तीक्ष्ण थी। जिस सभा में बैठते, वहाँ अपने तर्कों के दम पर सबको चकित कर देते। पर उनकी यह चमक उनके भीतर एक अनदेखा गर्व भी पैदा कर चुकी थी—एक ऐसा गर्व जो उन्हें महसूस नहीं होता था, पर दूसरों को स्पष्ट दिखता था।

एक दिन उनके एक ज्ञानी, वृद्ध और अत्यंत प्रिय मित्र ने उनसे कहा, "बेंजामिन, तुम्हारे शब्दों में शक्ति बहुत है, पर उनकी रोशनी में गर्माहट नहीं। तुम बहस जीत लेते हो, पर इंसानी दिल हार देते हो।"

फ्रैंकलिन पहले तो मुस्कुराए, पर उस मुस्कान में हल्की असहजता थी। उन्होंने गंभीरता से पूछा, "क्या मैं सच में इतना कठोर बोलता हूँ?"

मित्र ने बहुत कोमल स्वर में कहा, "तुम्हारी वाणी आग जैसी है—जल्दी पकाती है, जल्दी जलाती है, पर साथ-साथ दगा भी दे जाती है। ज्ञान तभी सुंदर लगता है, जब वह दीपक की लौ की तरह शांत और सहनशील बने। याद रखो, जो व्यक्ति हर बात में खुद को सही साबित करने लगता है, वह दूसरों की आँखों में अपनी जगह खो देता है।"

ये शब्द तीर की तरह फ्रैंकलिन के भीतर उतर गए। उस रात उन्होंने देर तक जागकर अपनी डायरी खोली और लिखा—

"मुझे अपनी बुद्धि को शांत करना है। मैं आज से अधिक बोलने की अपेक्षा अधिक सुनने का प्रयास करूंगा।"

अगले महीनों में उन्होंने सचमुच इस व्रत को निभाया। वे हर बात ध्यान से सुनते, समझते और फिर ही कुछ कहते। उनके भीतर जो पहले गर्व था, वह अब शांति में बदलने लगा। धीरे-धीरे उनका व्यक्तित्व ऐसा हो गया कि लोग उनकी वाणी का इंतज़ार करने लगे—क्योंकि वे जानते थे, उनके शब्द अब तर्क की गर्जना नहीं, अनुभव की रोशनी लेकर आते हैं।

कुछ समय बाद संसद का एक बेहद महत्वपूर्ण सत्र बुलाया गया। देश के एक गंभीर मसले पर विचार-विमर्श होना था, पर बैठक शुरू होते ही नेताओं के बीच बहस, आरोप, विरोध और शोर ने माहौल को भारी बना दिया। हर कोई अपनी बात मनवाने पर तुला था, किसी को किसी की बात स्वीकार नहीं थी। कमरे की हवा तक गरम हो चुकी थी।

फ्रैंकलिन उस दिन सामान्य से भी अधिक शांत थे। वे अपनी सीट पर बैठे हर आवाज़ को सुन रहे थे—तेज़, खुरदरी, कटी हुई, बिखरी हुई। उनके चेहरे पर एक अद्भुत धैर्य था, जैसे कोई गहरी नदी जिसका पानी ऊपर से शांत दिखता है, पर भीतर बहुत कुछ समेटे रहता है।

काफी देर तक शोर चलता रहा। अंत में एक क्षण ऐसा आया जब सब थककर चुप हो गए। उसी क्षण फ्रैंकलिन उठे। उन्होंने किसी की ओर उंगली नहीं उठाई, किसी विचार को खारिज नहीं किया। बस हल्के से कहा—

"यदि समाधान चाहिए, तो सबसे पहले हमें अपनी आवाज़ों को विराम देना होगा। समाधान शोर से नहीं, समझ से पैदा होता है। और समझ तब आती है जब हम एक-दूसरे को सुनते हैं। बोलने से ज्ञान फैलता है, लेकिन सुनने से ज्ञान गहराता है।"

उनकी आवाज़ शांत थी, पर उसमें ऐसी गूँज थी कि पूरा कमरा स्थिर हो गया। पहली बार सभी को एहसास हुआ कि इतने लंबे समय में किसी ने वास्तव में सबकी बात सुनी थी। यह एहसास ही उनके शब्दों को भार दे रहा था।

बैठक समाप्त होने के बाद एक वरिष्ठ नेता उनके पास आए और बोले,

"आज मैंने सीखा कि शांत मन से निकला वचन सबसे प्रबल होता है। तुमने दिखा दिया कि बुद्धिमत्ता का अर्थ केवल जानना नहीं, बल्कि दूसरों को समझना भी है। सबसे ऊँची आवाज़ जीतती नहीं; सबसे गहरी आवाज़ जीतती है।"

फ्रैंकलिन ने धीरे से कहा,

"मनुष्य तभी महान बनता है जब वह खुद को दूसरों से बड़ा समझना बंद कर दे। विनम्रता ज्ञान को पंख देती है, और सुनना आत्मा को शांति।"

समय बीता, पर वह घटना फ्रैंकलिन के व्यक्तित्व का आधार बन गई। अब उनकी वाणी में वही तर्क, वही शक्ति थी, पर उसके भीतर शांत प्रकाश भी था। लोग उन्हें केवल एक ज्ञानी व्यक्ति नहीं, बल्कि एक संतुलित और सहृदय मानव के रूप में देखने लगे। उनकी रोशनी अब न जलाती थी, न चुभती थी—वह केवल मार्ग दिखाती थी।

इस पूरी कथा का मूल संदेश यही है—

सच्चा ज्ञान वही है जिसमें विनम्रता हो। सुनना केवल कानों का कार्य नहीं, बल्कि हृदय की परिपक्वता है। तेज़ होना अच्छी बात है, पर प्रकाशमय होना सबसे बड़ी उपलब्धि।

राष्ट्रमंडल खेल 2030 और बुलेट ट्रेन... यानि गुजरात में फिर से भाजपा जीतेगी

2030 में होने वाले राष्ट्रमंडल खेलों (कॉमनवेल्थ गेम्स) की मेजबानी अहमदाबाद को आधिकारिक रूप से सौंप दी गई है जिससे गुजरात की और तेज तरक्की का मार्ग प्रशस्त हो गया है। हम आपको बता दें कि अब अहमदाबाद-गांधीनगर क्षेत्र में इंफ्रास्ट्रक्चर विकास की रफ्तार तेज होगी। कॉमनवेल्थ स्पोर्ट जनरल असेंबली से मंजूरी के बाद गुजरात सरकार ने घोषणा की है कि सरदार वल्लभभाई पटेल स्पोर्ट्स एन्क्लेव और करई पुलिस अकादमी स्पोर्ट्स हब का निर्माण अप्रैल 2026 में शुरू होकर 2028–29 में पूरा होगा। हम आपको यह भी याद दिला दें कि हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सूरत में मुंबई–अहमदाबाद बुलेट ट्रेन कॉरिडोर की प्रगति की समीक्षा करते हुए इसे देश के भविष्य का परिवर्तनकारी मॉडल बताया था। देखा जाये तो राष्ट्रमंडल खेल और बुलेट ट्रेन, दोनों बड़े प्रोजेक्ट मिलकर गुजरात को एक नई पहचान देने जा रहे हैं और साथ ही यह 2027 के विधानसभा चुनावों में भाजपा की जीत को भी लगभग सुनिश्चित करेंगे। आज गुजरात एक बार फिर परिवर्तन के निर्णायक मोड़ पर खड़ा है और इस बार यह परिवर्तन न केवल आर्थिक या विकास का है, बल्कि राजनीतिक भविष्य का भी निर्धारक है। अहमदाबाद में 2030 कॉमनवेल्थ गेम्स की मेजबानी और मुंबई–अहमदाबाद बुलेट ट्रेन कॉरिडोर की तेज़ी से हो रही प्रगति ने गुजरात को वैश्विक मानचित्र पर नए अवतार में पेश करना शुरू कर दिया है। यह वही गुजरात है जिसने 2001–2014 के बीच विकास के जो बीज बोए थे, वे अब अंतरराष्ट्रीय रूप लेकर सामने आ रहे हैं।

कॉमनवेल्थ गेम्स के गुजरात में होने का मतलब है राज्य की खेल अधोसंरचना का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विकास होगा, युवा खिलाड़ियों को विश्वस्तरीय प्रशिक्षण मिलेगा, राज्य की वैश्विक ब्रांडिंग होगी और आने वाले दशक में गुजरात को भारत की खेल राजधानी (Sports Capital of India) बनाने की तैयारी भी साफ दिखाई दे रही है। सरदार वल्लभभाई पटेल स्पोर्ट्स एन्क्लेव, करई पुलिस अकादमी स्पोर्ट्स हब, नए एथलीट विलेज, हाई-परफॉर्मेंस लैब, विश्वविद्यालय आधारित स्पोर्ट्स इंफ्रास्ट्रक्चर, ये सब गुजरात को 2030 के बाद भी स्थायी लाभ देंगे। यह वही विरासत मॉडल है जिसने लंदन 2012 और बर्मिंघम 2022 को बदल दिया। अब यही मॉडल गुजरात में दिखेगा।

हम आपको बता दें कि राष्ट्रमंडल खेलों की वजह से गुजरात में 20,000 से ज्यादा होटल कमरों की मांग, नए स्टार्टअप, पर्यटन में उछाल और 30,000 से ज्यादा नौकरियाँ बनेंगी। यह सिर्फ खेल नहीं बल्कि पूरी अर्थव्यवस्था का पुनर्निर्माण है। कॉमनवेल्थ गेम्स में भाग लेने जब पूरी दुनिया के लोग अहमदाबाद आयेंगे तो वह बाजारों से खरीदारी भी करेंगे, घूमने के लिए राज्य के विभिन्न इलाकों में भी जाएंगे जिससे गुजरात के कारोबारियों को बड़ी कमाई होना तय है।

इसके साथ-साथ प्रधानमंत्री द्वारा सूरत में बुलेट ट्रेन स्टेशन का निरीक्षण गुजरात के तेज़ी से बदलते परिवहन ढांचे की झलक है। 508 किलोमीटर के इस कॉरिडोर ने गुजरात को देश का पहला हाई-स्पीड रेल राज्य बनाने की तैयारी पूरी कर दी है। हम आपको बता दें कि 85% से अधिक मार्ग वायाडक्ट पर है, 17 नदी पुल तैयार हैं, सूरत–बिलिमोरा सेक्शन लगभग पूरा हो गया है और 2026 तक दो गुना क्षमता वाला SVPI एयरपोर्ट बन जायेगा। जब मुंबई–अहमदाबाद का सफर 2 घंटे में तय होगा, तब गुजरात सिर्फ एक राज्य नहीं रहेगा बल्कि भारत का व्यापारिक हाई-स्पीड कॉरिडोर बन जाएगा। और यही वह बिंदु है जहाँ विकास राजनीति से मिलता है। 2027 में गुजरात विधानसभा चुनाव होंगे। जनता देखेगी कि किसके पास है एजेंडा? कौन दे सकता है भविष्य की तस्वीर? और कौन दिखा सकता है कि गुजरात सिर्फ विस्तार नहीं, बल्कि दुनिया के सामने एक 'मॉडल स्टेट' है? यहाँ भाजपा की स्थिति और मजबूत हो जाती है।

कॉमनवेल्थ गेम्स और बुलेट ट्रेन, ये दोनों प्रोजेक्ट सिर्फ विकास नहीं, भावना और आकांक्षा के भी प्रतीक हैं। गुजरात का युवा इससे अपने भविष्य को जोड़ चुका है। खेल में अवसर, नौकरी में वृद्धि और तकनीकी अधोसंरचना का नया युग आने वाले हैं। राजनीतिक दृष्टि से भाजपा ने 2027 की चुनावी पिच पर दो बड़े "विकास–सिक्सर" पहले ही जड़ दिए हैं। एक तरफ अंतरराष्ट्रीय खेल आयोजन की चमक, दूसरी तरफ बुलेट ट्रेन का आधुनिक भारत। यह पूरा नैरेटिव भाजपा के पक्ष में एकतरफा वातावरण बनाता है। विपक्ष भले ही अपने मुद्दे तलाश रहा हो, लेकिन उसके पास इस स्तर का कोई प्रतिविकल्पी विकास मॉडल नहीं है। इसलिए निष्कर्ष अत्यंत स्पष्ट है। 2030 के कॉमनवेल्थ गेम्स और बुलेट ट्रेन, दोनों मिलकर गुजरात को अगले दशक के लिए पूरी तरह बदलने जा रहे हैं। यही परिवर्तन की राजनीति भाजपा को 2027 के चुनाव में एक बार फिर भारी जीत की ओर ले जाती दिखाई दे रही है। गुजरात को विकास की जो दूरदृष्टि चाहिए वह इन दो विशाल परियोजनाओं के रूप में, पहले ही भाजपा के पास है।

अभियान

नारद की अधूरी विजय और विष्णु की माया - एक अनंत कथा जिसमें ऋषि का तप भी हार गया और मन का गर्व भी

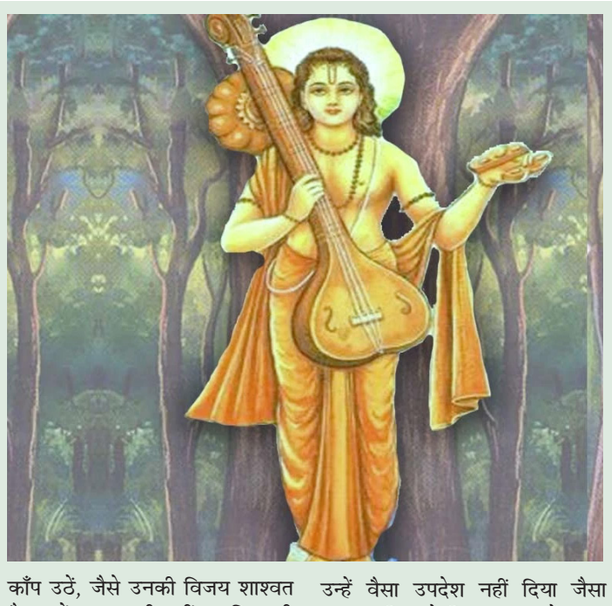

नारद मुनि उस समय एक अदृश्य घोड़े पर नहीं, बल्कि अपने ही अहंकार पर आरूढ़ थे। यह अहंकार साधारण नहीं था—वह ऐसा शक्तिशाली था कि जैसे किसी साधु के अंतर्मन में देवताओं ने गुप्त रूप से गरुड़ का वेग भर दिया हो। नारद मुनि के इस दर्प की उड़ान इतनी तीव्र थी कि स्वयं गरुड़ भी उसे देखकर विस्मित हो जाएँ और सोचें कि यह कौन-सा दिव्य वेग है, जो एक साधारण मानव-देहधारी ऋषि में चमक रहा है। परन्तु इस चमक के भीतर एक ऐसा धुआँ भी छिपा था, जिसे केवल भगवान विष्णु ही देख पा रहे थे—वह धुआँ था अहंकार का, जो धीरे-धीरे मुनि की तपस्या की जड़ों को जलाने लगा था।

भगवान विष्णु ने बड़ी शांति से, परन्तु अत्यंत गम्भीर निश्चय के साथ ठान लिया था कि वे इस रोग को अब और नहीं बढ़ने देंगे। साधु का अहंकार साधना का सबसे भयंकर शत्रु होता है, और नारद अब उसके प्रभाव में थे। उनके मन में यह विश्वास गहराने लगा था कि उन्होंने कामदेव को जीतकर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड पर कोई विशेष अधिकार पा लिया है। जैसे संसार का प्रत्येक जीव उनसे प्रभावित होना चाहिए, जैसे उनका नाम मात्र से देवता काँप उठें, जैसे उनकी विजय शाश्वत है। उन्हें आभास ही नहीं था कि उसी मार्ग पर, जहाँ वे स्वयं को विजयी समझते हुए आगे बढ़ रहे थे, वहीं एक ऐसी परीक्षा उनका इंतज़ार कर रही थी जो उनके सम्पूर्ण गर्व को भस्म कर देने में सक्षम थी।

नारद बैकुण्ठ पहुँचे थे, और उन्हें यह बड़ा संतोष था कि भगवान विष्णु ने उन्हें वैसा उपदेश नहीं दिया जैसा भगवान शिव ने दिया था। उन्हें लगा, ''देखा! मैंने इतनी बड़ी विजय पाई है कि स्वयं विष्णु भी मेरे तेज को स्वीकार किए बिना नहीं रह सके।'' यह सोचकर वे भीतर ही भीतर खिल उठे, जैसे कोई साधारण मनुष्य बड़ी विजय के बाद अपने को सम्राट समझने लगे। भगवान विष्णु ने भी मुस्कुराकर उन्हें विदा किया—और उस मुस्कान के भीतर एक बड़ी योजना छिपी थी जिसे नारद अभी समझ न सके। वे अपनी माया के विस्तार में तुरंत लग गए, और वही माया आगे चलकर उस घटना का स्वरूप बनी जिसके कारण नारद को अपने मन के दर्प का स्वाद चखना पड़ा।

जिस मार्ग से नारद को लौटना था, उसी मार्ग पर एक अद्भुत मायानगरी खड़ी की गई। यह नगर केवल सुंदर नहीं था—वह इतना दिव्य था कि उसकी आभा बैकुण्ठ की आभा को भी चुनौती देती दिखाई देती थी। महलों की दीवारें ऐसे चमक रही थीं जैसे उनमें स्वयं चंद्रमा का प्रकाश बस गया हो; उद्यानों में खिले पुष्प ऐसे थे जैसे किसी ने इन्द्रलोक की सुंदरियों की मुस्कान को फूलों का रूप देकर पृथ्वी पर रोप दिया हो। नगर की सुन्दरियाँ जब चलती थीं तो ऐसा प्रतीत होता था कि मानो स्वयं रति और कामदेव मनुष्य-रूप धारण कर पृथ्वी पर विचरण कर रहे हों।

इस नगर का राजा शीलनिधि था—वैभव, बल, नीति और कीर्ति का ऐसा अद्वितीय संगम कि सौ इन्द्र भी उसके दरबार में स्वयं को साधारण समझें। वही शीलनिधि एक कन्या का पिता था—विश्वमोहिनी। उसका नाम ही नहीं, उसका रूप भी ऐसा था कि उसे देखकर लक्ष्मी जी भी क्षणभर के लिए अपनी सौन्दर्य-सत्ता पर संशय कर लें। नगर में विश्वमोहिनी का स्वयंवर हो रहा था, और दूर-दूर से वीर, राजकुमार और देवता समान पुरुष वहाँ एकत्र हुए थे—सभी के मन में एक ही इच्छा थी कि किसी प्रकार इस अद्वितीय रूपसि का वरण कर लें।

जब नारद इस अद्भुत नगर में पहुँचे, तो वे आश्चर्य से भर उठे। बैकुण्ठ आते-जाते उन्होंने अनगिनत मार्ग देखे थे, परन्तु ऐसा नगर कभी उनकी दृष्टि में नहीं आया था। नगर के सौंदर्य और वहाँ के उत्सव को देखकर उनकी जिज्ञासा जाग उठी कि यहाँ यह अद्भुत हलचल क्यों है। वे सीधे राजमहल पहुँचे। राजा ने चरण धोकर उनकी पूजा की, और उसी क्षण नारद के भीतर छिपा अहंकार फिर से सिर उठाने लगा—''देखो, मैंने कामदेव को जीता क्या, अब संसार मेरा सम्मान करने लगा है!''

तभी राजा ने विश्वमोहिनी को बुलवाया। वह जैसे ही महल के विशाल द्वार से भीतर आई, पूरा वातावरण स्तब्ध हो गया—और नारद भी। वे उसे निर्निमेष निहारते रह गए। उन्होंने अनगिनत लोकों की सुंदरियाँ देखी थीं, परन्तु ऐसा रूप उन्होंने कभी नहीं देखा। उसके मुखमंडल का नूर ऐसा था कि सूर्य भी उसकी कान्ति के सामने फीका लगे। उसकी आँखों की भाषा ऐसी थी कि वर्षों की तपस्या भी क्षणभर में विलीन हो जाए।

यही वह क्षण था जब मुनि उसी कामदेव के जाल में पुनः फँस गए जिसे परास्त करने का दर्प वे अपने मन में भरकर घूम रहे थे। वे भूल गए कि उन्होंने संसार को उपदेश दिया है, भूल गए कि उन्होंने स्वयं को विजयी समझा था। उनके मन में पूर्ण रूप से मोह का उदय हो चुका था, परन्तु वे उसे छिपाते हुए बाहर से साधु-सज्जन बने रहे।

विश्वमोहिनी की हस्तरेखाओं में जो लिखा था, उसने नारद के हृदय में एक और नया लोभ जगा दिया। उसके भाग्य में कुछ ऐसा था, ऐसा अनोखा योग था, जो नारद को भीतर ही भीतर अत्यंत हर्षित कर रहा था—परन्तु वे किसी को कुछ कह नहीं रहे थे।

अब प्रश्न यह था—उस भाग्य में ऐसा क्या था?

ऐसा क्या था जिसने नारद के अहंकार को और भड़काया और उनके मन में यह विश्वास जगा दिया कि यह रूपसी उन्हें ही प्राप्त होगी?

और इसी विश्वास ने उनकी आगामी विनाशक गलती का द्वार खोल दिया

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH

केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री श्री नितिन गडकरी की अध्यक्षता और मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की उपस्थिति में गुजरात की राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाओं के संदर्भ में समीक्षा बैठक हुई

राज्य में राजमार्गों पर यातायात के 35 फीसदी से अधिक भार के मद्देनजर एनएचएआई द्वारा राजमार्गों की समुचित मरम्मत और आवश्यकता पड़ने पर विस्तारीकरण के कार्य जारी रहने चाहिए : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

- **मुख्यमंत्री ने अहमदाबाद-मुंबई, राजकोट-गोंडल-जेतपुर और अहमदाबाद-उदयपुर हाईवे के प्रगतिरत कार्यों को तेजी से पूरा करने के मुद्दे पर चर्चा की**
- **मुख्यमंत्री द्वारा उठाए गए मुद्दों पर त्वरित प्रतिक्रिया देते हुए केंद्रीय मंत्री ने गुजरात में एनएचएआई के हाईवे सहित अन्य परियोजनाओं के लिए केंद्र सरकार की ओर से 20 हजार करोड़ रुपए स्वीकृत करने का आश्वासन दिया**

केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री श्री नितिन गडकरी :-
- सड़कों की उच्च गुणवत्ता सुनिश्चित करने अधिकारियों और ठेकेदारों को स्पष्ट निर्देश
- सड़कों के निर्माण और रिसर्फेसिंग में नागरिक सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दें

(जीएनएस)। गांधीनगर, 27 नवंबर : केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री श्री नितिन गडकरी और गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की उपस्थिति में गांधीनगर में गुजरात में राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजनाओं के अंतर्गत संपन्न एवं प्रगतिरत कार्यों की विस्तृत समीक्षा के लिए उच्च स्तरीय बैठक हुई। केंद्रीय मंत्री ने इस बैठक में अधिकारियों और ठेकेदारों से साफ-साफ कहा कि यह अत्यावश्यक है कि सड़कों की गुणवत्ता उच्च स्तर की हो तथा नागरिकों की सुविधा एवं सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए। इस संदर्भ में उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय

राजमार्ग के निर्माण और रिसर्फेसिंग के कार्यों में किसी भी प्रकार की लापरवाही को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। इतना ही नहीं, यदि निर्धारित समयसीमा में सड़क निर्माण के सभी कार्य पूरे नहीं हुए और लापरवाही पाई गई, तो ठेकेदार को ब्लेकलिस्ट करने तक के कठोर कदम भी उठाए जाएंगे। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने इस बैठक की चर्चाओं के दौरान केंद्रीय मंत्री से अनुरोध किया कि राज्य में राष्ट्रीय राजमार्ग पर यातायात का भार 35 फीसदी से अधिक रहता है, इस संदर्भ में एनएचएआई को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि इन राजमार्गों की समुचित मरम्मत होती रहे और आवश्यकता पड़ने पर विस्तारीकरण के कार्य भी जारी रहें। उन्होंने विशेष रूप से, अहमदाबाद-मुंबई, राजकोट-गोंडल-जेतपुर और अहमदाबाद-उदयपुर, तीनों राष्ट्रीय राजमार्गों के प्रगतिरत कार्यों को तेजी से पूरा करने की दिशा में भी केंद्रीय मंत्री का ध्यान आकृष्ट किया।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल द्वारा केंद्रीय मंत्री के समक्ष रखे गए मुद्दों पर त्वरित प्रतिक्रिया देते हुए श्री नितिन गडकरी ने केंद्र सरकार की ओर से गुजरात में भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) के तहत हाईवे सहित अन्य परियोजनाओं के लिए 20 हजार करोड़ रुपए स्वीकृत करने का आश्वासन इस बैठक में दिया।

इस बैठक में एनएचएआई की ओर से गुजरात में राष्ट्रीय राजमार्ग परियोजना के अंतर्गत अब तक हुए कार्यों और आगामी समय में एनएचएआई और सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय की ओर से शुरू की जाने वाली विभिन्न परियोजनाओं के बारे में भी प्रेजेंटेशन दिया गया। साथ ही, गुजरात में स्थित विभिन्न राष्ट्रीय राजमार्गों की मौजूदा स्थिति, सड़कों के कार्य कब तक पूरे होने चाहिए थे और अभी जो कार्य बाकी रह गए हैं उन्हें कब तक पूरा कर लिया जाएगा, इन सभी विषयों पर गहन चर्चा की गई। मुख्य सचिव श्री एम.के. दास ने गुजरात सरकार द्वारा हाईवे और सड़कों के प्रगतिरत कार्यों और केंद्र सरकार के साथ समन्वय की जानकारी दी।

समीक्षा बैठक में मुख्यमंत्री के मुख्य सलाहकार डॉ. हसमुख अढिया और सलाहकार श्री एस.एस. राठौर, अपर मुख्य सचिवों और प्रधान सचिवों के साथ-साथ मुख्यमंत्री की अपर प्रधान सचिव श्रीमती अवंतिका सिंह, सचिव डॉ. विक्रांत पांडे और केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय और गुजरात सरकार के सड़क विभाग के अंतर्गत राष्ट्रीय राजमार्ग डिविजन सहित संबद्ध विभागों के उच्च अधिकारी उपस्थित रहे।

कच्छ-सौराष्ट्र के कच्छी छुहारे और केसर आम से लेकर हस्तकला तथा हाथबुनाई काम के 10 से अधिक उत्पादों ने प्राप्त किया है जीआई टैग

- **वीजीआरसी कच्छ-सौराष्ट्र जीआई टैग उत्पादों को प्रमोट करेगी और स्थानीय कारीगरों को सशक्त करेगी**
- **वीजीआरसी निर्यात क्षमताओं में वृद्धि करेगी तथा प्रधानमंत्री के 'वोकल फॉर लोकल' विजन को वेग देगी**

(जीएनएस)। गांधीनगर : भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने सदैव देश के स्थानीय एवं वंश-परंपरागत उत्पादों पर ध्यान केन्द्रित किया है। स्वदेशी उत्पादों को प्रोत्साहन देकर स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाने के उद्देश्य से प्रधानमंत्री ने 'वोकल फॉर लोकल' अभियान की शुरुआत की है। उन्होंने 'वोकल फॉर लोकल' तथा 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान के अंतर्गत जियोग्राफिकल इंडिकेशन (जीआई) टैग वाले उत्पादों को सक्रिय प्रोत्साहन दिया है और इन उत्पादों को सांस्कृतिक विरासत, आर्थिक सशक्तिकरण तथा वैश्विक मान्यता के साथ जोड़ा है। उन्होंने अपने रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' में भी बार-बार इन उत्पादों का उल्लेख किया है तथा कारीगरों को व्यक्तिगत रूप से जीआई सर्टिफिकेट प्रदान किए हैं।

उल्लेखनीय है कि केन्द्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्री पीयूष गोयल ने 'विकास भी, विरासत भी' के विजन के साथ 2030 तक भारत में 10,000 जीआई (भौगोलिक संकेत) टैग वाले उत्पादों तक पहुँचने का लक्ष्य रखा है। जीआई टैगिंग जैसी पहल द्वारा राज्य के कारीगरों तथा किसानों को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने के लिए गुजरात कच्छ के विख्यात कपड़े से लेकर सौराष्ट्र के प्रीमियम उत्पादों तक की अपनी विरासत को प्रमोट कर रहा है, जिससे राज्य वैश्विक स्तर पर आत्मनिर्भर बने। जीआई उत्पादों का संरक्षण तथा उनका प्रमोशन 'विकसित गुजरात से विकसित भारत' के सिद्धांत पर बल देता है, जो स्थानीय क्षमताओं को वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता में परिवर्तित करता है। कच्छ तथा सौराष्ट्र क्षेत्र ने अजरख, बांधणी (बंधेज), रोगन क्राफ्ट पेंटिंग, कच्छी शॉल, कच्छी छुहारा और केसर आम जैसे विख्यात उत्पादों के लिए जीआई टैग प्राप्त किए हैं, जो स्थानीय कारीगरों का विकास करते हैं और उन्हें वैश्विक पहचान देते हैं। राजकोट में आयोजित होने वाली आगामी वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस (वीजीआरसी) कच्छ-सौराष्ट्र के हस्तकला तथा हाथबुनाई कारीगरों की स्थानीय श्रेष्ठता एवं निर्यात संभावना को उजागर करने के लिए सज्ज है।

परंपरा तथा कलात्मकता से समृद्ध, गुजरात के कच्छ तथा सौराष्ट्र प्रदेशों ने उनकी सांस्कृतिक एवं कृषि विरासत को प्रस्तुत करने वाले उत्पादों के लिए 10 से अधिक जीआई मान्यताएँ प्राप्त की हैं। कच्छ के विख्यात उत्पादों में भरतकाम (कशीदाकारी), अजरख, ब्लॉक प्रिंटिंग, बांधणी टाई-डाई, रोगन क्राफ्ट पेंटिंग तथा कच्छी शॉल शामिल हैं। इसके अलावा; कृषि उत्पादों की बात करें, तो कच्छी छुहारे को भी जीआई टैग दिया गया है, जो उसके अद्भुत स्वाद एवं पोषक तत्वों से भरपूर गुणवत्ता के लिए विख्यात है। सौराष्ट्र के विशिष्ट उत्पादों में गीर का केसर आम, जो गीर प्रदेश में 'आम की रानी' के रूप में व्यापक रूप से जाना जाता है, जामनगरी बांधणी तथा राजकोट पटोळा रेशम बुनाई शामिल हैं। ये जामनगरी बांधणी तथा राजकोट की साड़ियाँ कई बॉलीवुड हस्तियों के वॉर्डरोब में भी स्थान पा चुकी हैं। इतना ही नहीं; सुरेन्द्रनगर की टांगलिया शॉल भी उसकी विशिष्ट वस्त्र कला का नमूना है, जिसने कला के उत्साहियों को आकर्षित किया है तथा एक वैश्विक मांग खड़ी की है।

सौराष्ट्र तथा कच्छ क्षेत्र में आयोजित होने वाली वीजीआरसी इस क्षेत्र की हस्तकला तथा हाथबुनाई कारीगरों की क्षमता को वेग देगी। यह दो दिवसीय कॉन्फ्रेंस हेरिटेज क्षेत्र के उद्यमियों, कारीगरों, इंटीरियर डिजाइनर्स तथा प्रोडक्ट डिजाइनर्स के लिए सरकारी ई-मार्केटप्लेस, निवेशकों, निजी उद्यमों तथा अग्रणी ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म के साथ सहयोग करने के लिए एक गतिशील प्लेटफॉर्म के रूप में सेवा देती है, जो नवीनीकरण, बाजार पहुँच तथा टिकाऊ विकास को प्रोत्साहन देता है।

गांधीधाम का गवरमेंट डीजल लोको मेंटेनेस शेड : देश ही नहीं, दुनिया के सर्वश्रेष्ठ उच्च-क्षमता मेंटेनेंस केंद्रों में शामिल

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री वेदप्रकाश ने गांधीधाम स्थित अत्याधुनिक (GDLG) गवरमेंट डीज़ल लोको मेंटेनेंस शेड का निरीक्षण किया। मिठीरोहर के निकट स्थित यह शेड भारतीय रेल के सबसे महत्वपूर्ण मेंटेनेंस केंद्रों में से एक है, जहाँ उच्च क्षमता वाले 250 लोकोमोटिव का विश्वस्तरीय रखरखाव किया जाता है। निरीक्षण के दौरान डीआरएम श्री वेदप्रकाश ने शेड की सुव्यवस्थित कार्यप्रणाली, साफ-सुथरे वातावरण, उन्नत तकनीकी सुविधाओं तथा कर्मचारी-क्षमता की सराहना की। उन्होंने कहा कि "यह केवल भारत ही नहीं, बल्कि दुनिया का एकमात्र ऐसा शेड है, जहाँ इतनी योजना, गुणवत्ता और दक्षता के साथ हाई हॉर्सपावर इंजनों का मेंटेनेंस किया जाता है। यहाँ न ऑयल लीकेज है और न ही किसी प्रकार की गंदगी — यह वास्तव में भारतीय रेल के लिए दिशा-निर्देशक मॉडल है।"

उच्च क्षमता और अत्याधुनिक व्यवस्था

- इस शेड की क्षमता कुल 250 लोकोमोटिव (213 लोको – 4500 HP, 37 लोको – 6000 HP) के नियमित मेंटेनेंस की है।
- लोकोमोटिव यहां से निकलकर पूरे देश में 95,000 किमी तक बिना किसी प्रमुख समस्या के लगातार संचालित रहते हैं।

- 6 ट्रैक वाले इस शेड में नियमित रूप से 5 लाइनों का उपयोग होता है। हर लाइन पर क्रेन प्रणाली उपलब्ध है, जिससे किसी भी लाइन पर किसी भी समय कार्य आसानी से किया जा सकता है।
- यह शेड 1,19,437.500 वर्ग मीटर (29.513 एकड़) क्षेत्र में विकसित किया गया है और देश के अन्य शेड से बिल्कुल अलग, योजनाबद्ध लेआउट रखता है।

प्रॉम्प्ट रेस्पॉन्स और ऑनलाइन मॉनिटरिंग

शेड में 24x7 उपलब्ध प्रॉम्प्ट रेस्पॉन्स टीम (PRT) और हेल्पलाइन के माध्यम से किसी भी लोकोमोटिव में आई समस्या पर त्वरित तकनीकी सहायता दी जाती है। ट्रेन चालक को रास्ते में किसी कठिनाई का सामना होने पर सीधे गांधीधाम शेड से ही मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है।

यहाँ इंजनों का मेंटेनेंस उतने ही समय में पूरा कर दिया जाता है, जितना समय कंडला-मुंद्रा बंदरगाह पर लोडिंग-अनलोडिंग में लगता है, जिससे माल ढुलाई की दक्षता कई गुना बढ़ती है।

आधुनिक सुरक्षा एवं संरक्षा प्रणाली

शेड में सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है।
- 7.5 लाख लीटर जल भंडारण क्षमता
- अत्याधुनिक फायरफाइटिंग सिस्टम
- ऑटो मोड पंपिंग सुविधा
- पूरे परिसर में फायर अलार्म सिस्टम, स्मोक डिटेक्टर और केंद्रीय मॉनिटरिंग तंत्र
- ऑन-साइट प्राथमिक उपचार केंद्र और एम्बुलेंस

इस शेड के संचालन से स्थानीय स्तर पर लगभग 500 लोगों को रोजगार भी प्राप्त हुआ है, जिससे कच्छ क्षेत्र के आर्थिक विकास को बढ़ावा मिला है।

तकनीकी विशेषताएँ – WDG4G एवं WDG6G लोकोमोटिव

शेड में रखरखाव किए जाने वाले WDG4G एवं WDG6G लोकोमोटिव आधुनिक तकनीक, पर्यावरण-अनुकूल उत्सर्जन मानकों और उच्च हॉर्सपावर क्षमताओं से युक्त हैं।
- WDG4G (4500 HP) – GEVO-12 इंजन आधारित
- WDG6G (6000 HP) – GEVO-16 इंजन आधारित

दोनों ही मॉडल UIC-1 उत्सर्जन मानकों का पालन करते हैं और 100 किमी/घंटा की अधिकतम गति के साथ उच्चतम ट्रैक्टिव क्षमता प्रदान करते हैं।

यह परियोजना 30 नवंबर 2015 को भारतीय रेल और निजी भागीदार के बीच हुए प्रोक्योरमेंट-कम-मेन्टेनेंस एग्रीमेंट (PCMA) के तहत अस्तित्व में आई। यह भारतीय रेल में पहली विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (FDI) आधारित परियोजनाओं में से एक है। बाद में इस संयुक्त उद्यम का नाम 27 सितंबर 2021 को बदलकर वैबटेक लोकोमोटिव प्राइवेट लिमिटेड कर दिया गया।

गांधीधाम का GDLG लोको शेड भारतीय रेल के तकनीकी आधुनिकीकरण का उत्कृष्ट उदाहरण है। सुव्यवस्थित प्रक्रियाएँ, स्वच्छ परिसर, उच्च क्षमता वाले लोकोमोटिव, त्वरित तकनीकी सहायता और पूर्ण सुरक्षा प्रणाली — ये सभी कारक इसे न केवल भारत का, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी सर्वश्रेष्ठ मेंटेनेंस डिपो बनाते हैं।

मंडल रेल प्रबंधक, अहमदाबाद ने गांधीधाम चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (GCCI) के साथ बैठक की

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल द्वारा गांधीधाम में गांधीधाम चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (GCCI) के साथ एक महत्वपूर्ण बैठक एवं संवाद सत्र का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता मंडल रेल प्रबंधक, अहमदाबाद श्री वेद प्रकाश ने की। इस बैठक में उद्योग प्रतिनिधियों, व्यापारिक संस्थाओं तथा विभिन्न हितधारकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और रेल परिवहन को अधिक प्रभावी एवं सुदृढ़ बनाने के लिए अपने सुझाव एवं अपेक्षाएँ साझा कीं।

कच्छ औद्योगिक कॉरिडोर से 50 MT से अधिक माल परिवहन का लक्ष्य

बैठक का मुख्य फोकस कच्छ औद्योगिक क्षेत्र से 50 मिलियन टन से अधिक माल परिवहन के लक्ष्य को मजबूती देना था। श्री प्रकाश ने बताया कि पश्चिम रेलवे उद्योग जगत के साथ साझेदारी को और मजबूत करते हुए लॉजिस्टिक्स को तेज़, विश्वसनीय और प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए निरंतर कार्य कर रहा है।

अहमदाबाद मंडल और गांधीधाम सब-डिवीजन की उत्कृष्ट उपलब्धियाँ

- वर्ष 2025-26 के पहले सात माह में 29.18 मिलियन टन माल परिवहन का उल्लेखनीय कीर्तिमान स्थापित किया गया है।
- इसी अवधि में 3.865 करोड़ से अधिक

का राजस्व प्राप्त हुआ है।
- इनमें से 22.77 मिलियन टन माल परिवहन गांधीधाम क्षेत्र से हुआ, जो कच्छ के उद्योग जगत और रेलवे के बीच मजबूत तालमेल का प्रतीक है।

श्री प्रकाश ने इन उपलब्धियों के लिए संपूर्ण रेलवे परिवार तथा व्यापारिक समुदाय को धन्यवाद देते हुए कहा कि यह सफलता सामूहिक प्रयासों का परिणाम है।

कच्छ क्षेत्रः विविध माल ढुलाई का प्रमुख केंद्र

गांधीधाम और कच्छ क्षेत्र से स्टील, सीमेंट, खनिज, कोयला, खाद, कृषि उपज, खाद्य तेल, औद्योगिक व खाद्य नमक, टीम्बर सहित विभिन्न वस्तुओं का बड़े पैमाने पर परिवहन होता है।

इन आवश्यकताओं को देखते हुए बैठक में निम्न बिंदुओं पर चर्चा हुईः

- माल ढुलाई हेतु इन्फ्रास्ट्रक्चर एवं यार्ड सुविधाओं का विस्तार
- लाइन क्षमता बढ़ाने तथा लोडिंग-अनलोडिंग की दक्षता में सुधार
- बढ़ती मांग के अनुरूप नए लॉजिस्टिक समाधान
- यात्रियों के लिए सुविधाओं के विस्तार के प्रस्ताव
- कच्छ में एयर कनेक्टिविटी सीमित होने के कारण रेल सेवा को मुख्य एवं सुरक्षित परिवहन साधन के रूप में और मजबूत बनाने की उम्मीदें

रेलवे–उद्योग साझेदारी को और मजबूत बनाने की प्रतिबद्धता

श्री प्रकाश ने उद्योग प्रतिनिधियों को आश्वस्त किया कि रेलवे उनके सुझावों को प्राथमिकता देकर भविष्य की योजना एवं सुविधाओं में शामिल करेगा। कच्छ क्षेत्र की तेजी से बढ़ती औद्योगिक गतिविधियों को देखते हुए रेलवे अपनी क्षमताओं के विस्तार एवं आधुनिक लॉजिस्टिक्स समाधान उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है।

पश्चिम रेलवे द्वारा तीन जोड़ी स्पेशल ट्रेनों के फेरे विस्तारित

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा तथा उनकी यात्रा मांग को पूरा करने के उद्देश्य से 03 जोड़ी स्पेशल ट्रेनों के फेरे विस्तारित किए गए हैं।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, ट्रेनों का विवरण इस प्रकार हैः

1.ट्रेन संख्या 09007/09008 वलसाड – खातीपुरा (साप्ताहिक) स्पेशल

ट्रेन संख्या 09007 वलसाड – खातीपुरा स्पेशल के फेरों को 25 दिसंबर, 2025 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09008 खातीपुरा – वलसाड स्पेशल के फेरों को 26 दिसंबर, 2025 तक विस्तारित किया गया है।

2.ट्रेन संख्या 09575/09576 राजकोट – महबूबनगर (साप्ताहिक) स्पेशल

ट्रेन संख्या 09575 राजकोट – महबूबनगर स्पेशल के फेरों को 29 दिसंबर, 2025 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09576 महबूबनगर – राजकोट स्पेशल के फेरों को 30 दिसंबर, 2025 तक विस्तारित किया गया है।

3.ट्रेन संख्या 09520/09519 ओखा – मदुरै (साप्ताहिक) स्पेशल

ट्रेन संख्या 09520 ओखा – मदुरै स्पेशल

के फेरों को 29 दिसंबर, 2025 तक विस्तारित किया गया है। इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09519 मदुरै – ओखा स्पेशल के फेरों को 02 जनवरी, 2026 तक विस्तारित किया गया है।

ट्रेन संख्या 09007, 09575 एवं 09520 के विस्तारित फेरों की बुकिंग 29 नवम्बर, 2025 से सभी पीआरएस काउंटरों और आईआरसीटीसी वेबसाइट पर शुरू होगी। ट्रेनों के ठहराव, संरचना और समय के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

'सामूहिक चिंतन से सामूहिक विकास' की शुरुआत सामूहिक यात्रा से

- **राज्य सरकार के चिंतन शिविर के लिए मंत्रिमंडल सहित उच्च अधिकारियों का दल अहमदाबाद से 'वंदे भारत' सुपर फास्ट ट्रेन में रवाना हुआ**
- **मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में प्रशंसनीय प्रयोग**

(जीएनएस)। गांधीनगर : वलसाड जिले के धरमपुर के निकट श्रीमद राजचंद्र आश्रम में आज यानी गुरुवार से शुरू हो रहे चिंतन शिविर के लिए मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में राज्य मंत्रिमंडल के सदस्य और उच्च अधिकारियों का दल सवेरे अहमदाबाद रेलवे स्टेशन से वंदे भारत सुपर फास्ट ट्रेन में सामूहिक रूप से रवाना हुआ। बता दें कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने राज्य प्रशासन को अधिक नागरिक-केंद्रित बनाकर उसकी प्रभावशीलता में वृद्धि करने के आशय से वर्ष 2003 से चिंतन शिविर की शुरुआत की थी। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में राज्य सरकार ने इस परंपरा को आगे बढ़ाते हुए समय के अनुरूप टेक्नोलॉजी और पारदर्शिता के साथ प्रशासनिक संवेदनशीलता को एक नई दिशा देने के लिए इस वर्ष 'सामूहिक चिंतन से सामूहिक विकास की ओर' की थीम के साथ चिंतन शिविर के 12वें संस्करण का आयोजन किया है। इस शिविर में शामिल होने के लिए मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल सहित मंत्रिमंडल के सदस्य तथा मुख्य सचिव श्री मनोज कुमार दास सहित राज्य सरकार के वरिष्ठ सचिव और अन्य उच्च अधिकारियों सहित हर कोई अपने सरकारी वाहन के बजाय भारतीय रेल सेवा की 'वंदे भारत' सुपर फास्ट ट्रेन में सहयात्री बनकर अहमदाबाद से रवाना हुआ।

भावनगर मंडल में हर्षोल्लासपूर्वक मनाई गई महान कवि श्री हरिवंश राय बच्चन जी की जयंती

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल में दिनांक 27.11.2025 (गुरूवार) को महान हिंदी साहित्यकार व पद्म भूषण से सम्मानित कवि श्री हरिवंश राय बच्चन जी की जन्म-जयंती हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। इस अवसर पर मंडल में एक गरिमामयी संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा जी द्वारा दीप प्रज्वलन तथा श्री बच्चन जी के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर किया गया। संगोष्ठी में तीन कर्मचारियों तथा एक अधिकारी ने श्री बच्चन जी के जीवन वृत, साहित्यिक योगदान एवं प्रमुख रचनाओं पर अपनी सारगर्भित प्रस्तुति दी। साथ ही उनकी प्रसिद्द काव्य रचनाओं का वाचन कर उपस्थित जनसमूह को मंत्रमुग्ध कर दिया।

कार्यक्रम के दौरान श्री हरिवंश राय बच्चन जी के जीवन और कृतित्व पर आधारित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, जिसमें सही उत्तर देने वाले प्रतिभागियों को स्थल पर ही पुरस्कार प्रदान किए गए। वक्ताओं को भी स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। मंडल रेल प्रबंधक एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक ने इस आयोजन की सराहना करते हुए साहित्यिक आयोजनों के माध्यम से हिंदी भाषा के संवर्धन एवं साहित्यिक चेतना के प्रसार को प्रेरणादायी बताया।

कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ अनुवादक श्री परेश बी. मजीठिया द्वारा सफलतापूर्वक किया गया।

इस अवसर पर अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी महोदय ने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों से राजभाषा हिंदी के प्रयोग एवं प्रसार को प्रोत्साहन मिलता है। उन्होंने भविष्य में भी इसी प्रकार के प्रेरक कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित करने का आग्रह किया।

दिनांक 27.11.2025 को मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भावनगर की तिमाही बैठक भी मंडल रेल प्रबंधक महोदय श्री दिनेश वर्मा जी की अध्यक्षता में तथा अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री हिमांशु शर्मा जी की उपस्थिति में आयोजित की गई। इस बैठक में सभी शाखा अधिकारी, सभी सहायक मंडल इंजीनियर, तथा स्टेशन राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सभी अध्यक्षों ने भाग लिया। इस बैठक में पिछले तीन माह के दौरान सभी विभागों में किए गए हिंदी कार्य के समीक्षा की गई।

कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए राजभाषा विभाग की विशेष रूप से सराहना

रेलवे बोर्ड मुख्यालय में गरिमापूर्ण तरीके से मना 'संविधान दिवस'

'**(जीएनएस)।** संविधान दिवस' के अवसर पर बुधवार को रेल भवन स्थित रेलवे बोर्ड मुख्यालय में एक विशेष समारोह का आयोजन किया गया। इस गरिमापूर्ण कार्यक्रम में रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी (CEO) सतीश कुमार ने सभी वरिष्ठ अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ संविधान की उद्देशिका का पाठ किया।

संविधान के प्रति दोहराया संकल्प

कार्यक्रम का आयोजन सुबह 11:00 बजे बोर्ड के सम्मेलन कक्ष में किया गया। अध्यक्ष श्री सतीश कुमार की अगुवाई में उपस्थित सभी कार्मिकों ने भारत के संविधान की उद्देशिका (Preamble) का सामूहिक वाचन किया। इस दौरान सभी ने संविधान के मूलभूत आदर्शों का पालन करने और राष्ट्र की एकता व अखंडता को अक्षुण्ण बनाए रखने का संकल्प लिया।

डिजिटल भागीदारी पर भी जोर

रेलवे बोर्ड द्वारा जारी परिपत्र के अनुसार, इस भौतिक समारोह के अलावा डिजिटल माध्यमों से भी संविधान दिवस मनाने पर जोर दिया गया। अधिकारियों और कर्मचारियों को "MyGov.in" और "constitution75.com" वेबसाइटों के माध्यम से 'संवैधानिक लोकतंत्र' पर आयोजित ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया गया। साथ ही, संविधान की उद्देशिका का ऑनलाइन वाचन कर प्रमाण-पत्र प्राप्त करने का भी आह्वान किया गया।

क्यों मनाया जाता है यह दिवस?

गौरतलब है कि 26 नवंबर 1949 को भारत की संविधान सभा ने औपचारिक रूप से संविधान को अपनाया था। इसी ऐतिहासिक दिन की स्मृति में हर साल 26 नवंबर को 'संविधान दिवस' मनाया जाता है।

तीन ट्रेनों का दिसंबर 2025 से वडोदरा मंडल के स्टेशनो पर अतिरिक्त ठहराव

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा एवं मांग को ध्यान में रखते हुए वडोदरा मंडल के विभिन्न स्टेशनों पर तीन ट्रेनों को अतिरिक्त ठहराव प्रदान किया गया है। पश्चिम रेलवे के जनसंपर्क अधिकारी श्री अनुभव सक्सेना द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, इन ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार हैः

1. 10 दिसंबर, 2025 को बांद्रा टर्मिनस से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19019 बांद्रा टर्मिनस–हरिद्वार एक्सप्रेस चांपानेर रोड और खरसालिया स्टेशनों पर रुकेगी। इस ट्रेन का चांपानेर रोड स्टेशन पर आगमन/प्रस्थान 07:18 बजे/07:19 बजे तथा खरसालिया स्टेशन पर आगमन/प्रस्थान 07:48 बजे/07:49 बजे होगा। इसी तरह, 10 दिसंबर, 2025 को हरिद्वार से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19020 हरिद्वार– बांद्रा टर्मिनस एक्सप्रेस खरसालिया और चांपानेर रोड स्टेशनों पर रुकेगी। इस ट्रेन खरसालिया स्टेशन पर आगमन/प्रस्थान 13:01 बजे/13:02 बजे तथा खरसालिया स्टेशन पर आगमन/प्रस्थान 13:20 बजे/13:21 बजे होगा।
2. 01 दिसंबर, 2025 को अहमदाबाद से यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19418 अहमदाबाद–बोरीवली एक्सप्रेस बाजवा स्टेशन पर रुकेगी। यह ट्रेन 02:27 बजे बाजवा स्टेशन पहुंचेगी और 02:29 बजे प्रस्थान करेगी।

ट्रेनों के ठहराव, संरचना और समय के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

पश्चिम रेलवे
अहमदाबाद

एनएचएसआरसीएल के FOB-3 का विस्तार

ई-निविदा सूचना संख्या: T.No: DyCECI ADINHSRCL-FOB01 (सिंगल पैकेट) भारत संघ के राष्ट्रपति की ओर से पश्चिम रेलवे, अहमदाबाद के उप मुख्य अभियंता (निर्माण)-I द्वारा, निम्नलिखित कार्य हेतु ई-निविदाएँ आमंत्रित की जाती हैं।**1. कार्य का नाम एवं स्थान:**"एनएचएसआरसीएल के FOB-3 का विस्तार, ताकि इसे साबरमती (SBT) रेलवे स्टेशन के डिपार्चर ब्लॉक भवन से जोड़ा जा सके।" **2. कार्य की अनुमानित लागत:** ₹4,05,11,490.00 **3. जमा की जाने वाली बयाना राशि (EMD):** ₹3,52,600.00. **4. निविदा फॉर्म शुल्क:** निशुल्क **5. कार्य की पूर्णता अवधि:** 90 दिन (नब्बे दिन), मानसून सहित **6. निविदा जमा करने की तिथि एवं समय:** 15.12.2025 को 15:00 बजे तक **7. वेबसाइट व सूचना पट्ट विवरण (जहाँ निविदा का पूरा विवरण देखा जा सकता है) एवं कार्यालय का पता:**उप मुख्य अभियंता (निर्माण)-Iका कार्यालय, पश्चिम रेलवे, द्वितीय तल, 'C' विंग, निर्माण भवन, DRM कार्यालय के पास, असारवा, अहमदाबाद – 382345 **वेबसाइट: www.ireps.gov.in** CPM 085

हमें लाइक करें: facebook.com/WesternRly

तीन फीट की ऊँचाई, लोहे का हौसला-सुप्रीम कोर्ट तक लड़कर डॉक्टर बना गुजरात का गणेश

(जीएनएस)। गुजरात के भावनगर जिले के गोरखी गांव का एक साधारण-सा घर आज गर्व से चमक रहा है, क्योंकि इसी घर से निकला एक ऐसा युवक है जिसने दुनिया को यह दिखा दिया कि इंसान का कद चाहे जितना छोटा हो, लेकिन उसके सपने आकाश जितने विशाल हो सकते हैं। गणेश बरैया, जिनकी लंबाई मात्र तीन फीट है और वजन सिर्फ बीस किलो, आज मेडिकल ऑफिसर के रूप में अपनी पहली पोस्टिंग संभाल रहे हैं। 25 वर्षीय गणेश को देखकर कोई यह नहीं कह सकता कि उनके भीतर ऐसा ज्वालामुखी सुलग रहा है जिसने वर्षों तक कठिनाइयों से लड़कर अपना रास्ता खुद बनाया है।

गणेश जन्म से ही बौनेपन की समस्या के साथ आए थे। घर के आंगन में जब वे लड़खड़ाते कदमों से चलते थे, तो उनके माता-पिता की चिंता उनके पीछे-पीछे चलती थी। गांव के लोग अक्सर कहते—"इसका क्या होगा?" लेकिन गणेश के मन में बचपन से ही एक डॉक्टर बनने की धुन थी। उनकी शारीरिक बनावट भले ही कमजोर थी, लेकिन दिमाग तेज, दिल मजबूत और इरादा अटूट था। स्कूल में पढ़ाई के दौरान वे हमेशा अपनी कक्षा के तेज़ छात्रों में गिने जाते थे। उन्होंने 12वीं में 87% अंक हासिल किए और डॉक्टर बनने की राह में पहला मजबूत कदम रखा।

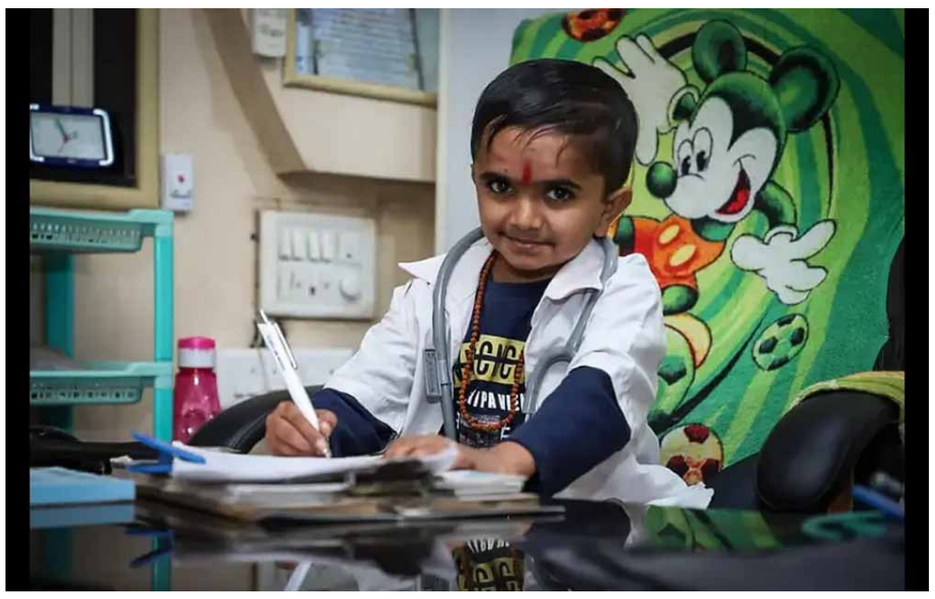

फिर आया NEET का सफर। हर दिन घंटों पढ़ाई, कठिनाइयों के बावजूद जिद, और अंत में 233 अंक। यह स्कोर उनके सपने को साकार करने के लिए काफी था, लेकिन इसी वक्त जीवन ने उन्हें सबसे बड़ी चुनौती दी। 2018 में गुजरात सरकार ने गणेश और दो अन्य दिव्यांग छात्रों को यह कहकर एमबीबीएस में दाखिला देने से इनकार कर दिया कि उनकी शारीरिक बनावट चिकित्सा शिक्षा के लिए अनुकूल नहीं है। यह निर्णय गणेश के दिल पर भारी चोट की तरह गिरा। लेकिन वे हार मानने वालों में से नहीं थे। उनके स्कूल के प्रिंसिपल दलपत कटारिया और ट्रस्टी रेवतसिंह सरवैया उनके साथ खड़े हुए। गणेश ने हिम्मत जुटाई और अदालत का दरवाजा खटखटाया।

यह लड़ाई सीधी नहीं थी। पहले राज्य स्तर पर सुनवाई हुई, फिर मामला आगे बढ़ते-बढ़ते देश की सर्वोच्च अदालत तक पहुंचा। सुप्रीम कोर्ट में गणेश का पक्ष रखा गया—एक ऐसा युवक जो अपने शरीर की सीमाओं के बावजूद डॉक्टर बनने की क्षमता और योग्यता रखता है। आखिरकार न्याय की जीत हुई और अदालत ने कहा कि किसी भी छात्र को उसकी ऊंचाई या शारीरिक सीमाओं के आधार पर चिकित्सा शिक्षा से वंचित नहीं किया जा सकता। यह फैसला न सिर्फ गणेश के लिए, बल्कि देश के सभी दिव्यांग छात्रों के लिए उम्मीद की नई किरण बनकर आया।

एमबीबीएस की पढ़ाई शुरू होते ही गणेश एक नई दुनिया में प्रवेश कर चुके थे, लेकिन चुनौतियाँ अभी भी खत्म नहीं हुई थीं। एनेटॉमी डिसेक्शन की क्लास में ऊँचे टेबल पर रखे शव को वे देख भी नहीं पाते थे। प्रोफेसर और साथी छात्रों ने स्थिति समझी और वे हमेशा गणेश के लिए आगे की सीटें रोककर रखते। जब सर्जरी की क्लास होती तो उनके दोस्त उन्हें अपने कंधों पर उठाकर ऑपरेशन टेबल के पास ले जाते ताकि वे ऊपर से सब कुछ साफ देख सकें। मेडिकल कॉलेज का हर दिन गणेश के हौसले की परीक्षा लेता था, लेकिन हर बार वे जीतते हुए आगे बढ़ते गए।

सालों की पढ़ाई, मेहनत, संघर्ष और धैर्य के बाद वह दिन आया जब गणेश बरैया ने डॉक्टर की सफेद कोट पहनकर अपने नाम के आगे 'डॉ.' लिखते हुए खुद को आईने में देखा। गुरुवार को उन्होंने चिकित्सा अधिकारी के रूप में अपनी पहली पोस्टिंग जॉइन की। यह सिर्फ जॉब नहीं थी, बल्कि उन सभी तानों, परेशानियों, तकलीफों और चुनौतियों पर जीत का प्रतीक थी जो बचपन से उनके कदमों के साथ चलते आए थे।

गणेश का परिवार—किसान माता-पिता, सात बहनें और एक छोटा भाई—आज अपने बेटे को गर्व से देखकर भावुक हो उठता है। गणेश का अगला सपना अपने गांव के लिए और अपने परिवार के लिए एक सुंदर घर बनाना है, जहाँ उनकी मां-बाप आराम से रह सकें। वे कहते हैं—"मेरे दोस्तों, शिक्षकों और प्रोफेसरों ने मुझे इंसानियत का सबसे खूबसूरत रूप दिखाया है। मैं जिंदगी भर उनका आभार मानता रहूंगा।"

गणेश बरैया की यह कहानी किसी चमत्कार से कम नहीं। यह कहानी बताती है कि इंसान का शरीर सीमित हो सकता है, लेकिन उसका संकल्प सीमा रहित होता है। यदि कोई सपने देखने की हिम्मत करता है और उन्हें पूरा करने का जुनून रखता है, तो दुनिया की कोई ताकत उसे रोक नहीं सकती।

मध्यान्ह भोजन योजना में 11 करोड़ का महाघोटाला, बच्चों की थाली पर डाका डालने वाले 45 जिम्मेदारों पर केस

(जीएनएस)। बलरामपुर जिले की शांत फिज़ा गुरुवार को उस समय भारी हो गई जब यह खुलासा हुआ कि मध्यान्ह भोजन योजना, जो गरीब बच्चों के पेट भरने के लिए बनाई गई थी, उसी योजना को चलाने वाले जिम्मेदारों ने मिलकर करोड़ों रुपये का गबन कर लिया। जिस भोजन से बच्चों का भविष्य बनना था, उसी भोजन के नाम पर बने कागज़ों में हेरफेर कर 11 करोड़ रुपये से अधिक की धनराशि डकार ली गई। यह गड़बड़ी सिर्फ लापरवाही नहीं थी, बल्कि एक संगठित और बारीक ढंग से रचा गया खेल था जिसने मासूम बच्चों की थाली से निवाला छीन लिया। पूरा मामला तब सामने आया जब बीएसए शुभम शुक्ला ने लंबे समय से चल रही अनियमितताओं की विभागीय जांच कराई। जांच ने हैरान कर देने वाले तथ्य उजागर किए। कागज़ों में छात्र संख्या में गड़बड़ी, फर्जी दस्तावेज़, और संशोधित एक्सेल शीट अपलोड कर ऐसा तंत्र बनाया गया था कि रकम बढ़ती भी रहे और गड़बड़ी का कोई निशान भी न मिले। जांच में पाया गया कि वास्तविक छात्र संख्या वाली शीट को अपलोड करने के बजाय एक कूटरचित शीट अपलोड की जाती थी, जिसमें कुछ विद्यालयों

की संख्या बढ़ा दी जाती थी, और कुछ की घटा दी जाती थी। इससे कुल राशि में बदलाव नहीं होता था और इस हेरफेर की भनक लंबे समय तक नहीं लगी।

सबसे चौंकाने वाली बात यह सामने आई कि जिन स्कूलों के खातों में अतिरिक्त धन भेजा जाता था, वहाँ से प्रधानाध्यापकों और समितियों द्वारा रकम निकालकर आपस में बांटी जा रही थी। यह खेल महीनों नहीं, बल्कि वर्षों से चलता आ रहा था। विभागीय धन को निजी संपत्ति की तरह लूटने वाले इन लोगों ने बच्चों के पेट पर ऐसा हमला किया जिसकी भरपाई कभी नहीं हो सकती।

जैसे ही पूरे प्रकरण की शिकायत औपचारिक रूप से दर्ज हुई, पुलिस टीम सक्रिय हुई और गुरुवार को कोतवाली नगर पुलिस ने दबिश देकर पांच आरोपित—मलिक मुनव्वर, फिरोज अहमद, अशोक कुमार गुप्ता, नसीम अहमद और मोहम्मद अहमदुल कादरी—को नार्मल तिराहे के पास से गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ में सबसे बड़ा खुलासा तब हुआ जब योजना का समन्वयक फिरोज अहमद खान, जो इस पूरे खेल का कथित मास्टरमाइंड बताया जा रहा है, ने स्वीकार किया कि वही फर्जी एक्सेल शीट पोर्टल पर अपलोड करवाता था। उसकी इस स्वीकारोक्ति ने पूरे प्रकरण को स्पष्ट कर दिया कि यह कोई चूक नहीं, बल्कि सुनियोजित घोटाला था।

इस घोटाले में कुल 45 लोगों के खिलाफ नामजद मुकदमा दर्ज किया गया है। पुलिस अधीक्षक विकास कुमार ने बताया कि 11 करोड़ रुपये से अधिक की गड़बड़ी दस्तावेजों में प्रमाणित हो चुकी है और अब तकनीकी जांच से यह पता लगाया जा रहा है कि रकम किन–किन खातों में गई, किसने निकाली और कैसे इस्तेमाल की गई। बाकी आरोपितों की गिरफ्तारी के प्रयास जारी हैं।

यह मामला न केवल प्रशासन और पुलिस के लिए बल्कि पूरे समाज के लिए एक कड़वा कटाक्ष है कि जिस योजना का उद्देश्य बच्चों को पोषण देना था, उसी योजना में शामिल लोगों ने ही उनके निवाले पर डाका डाल दिया। यह सिर्फ भ्रष्टाचार नहीं, बल्कि नैतिकता की हत्या है—और बलरामपुर की यह घटना उस कटु सत्य का दस्तावेज़ बन गई है कि लालच इंसान को किस स्तर तक गिरा सकता है।

फेसबुक की दोस्ती ने लगाया 60 लाख का चूना ऑनलाइन स्टोर के नाम पर नोएडा निवासी से बड़ी ठगी

(जीएनएस)। नोएडा के सेक्टर–43 में रहने वाले मनोज नेहरा की जिंदगी में सोशल मीडिया पर हुई एक सामान्य-सी दोस्ती ऐसा तूफान लेकर आई, जिसकी उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी। फेसबुक पर 'माही' नाम की एक महिला से शुरू हुई बातचीत धीरे-धीरे भरोसे में बदल गई और यही भरोसा मनोज के लिए सबसे बड़ी मुसीबत बन गया। साइबर ठगों ने ऑनलाइन स्टोर के नाम पर उन्हें ऐसा लालच दिया कि वे देखते-देखते करीब 60 लाख रुपये गंवा बैठे। अब यह मामला साइबर क्राइम थाना में दर्ज हो चुका है और पुलिस इसकी गहराई से जांच कर रही है। मनोज की कहानी किसी चेतावनी जैसी है, जो आज के डिजिटल दौर में हर उस व्यक्ति के लिए सबक है जो सोशल मीडिया पर अजनबियों से बातचीत करते हैं। शुरुआत में 'माही' की बातचीत सामान्य थी—दोस्ती, हाल-चाल, कामकाज। धीरे-धीरे उसने मनोज का विश्वास जीत लिया और एक दिन उसने बताया कि वह एक अमेरिकी कंपनी के लिए ऑनलाइन स्टोर चलाती है, जिससे उसे हर रोज़ अच्छा-खासा मुनाफा मिलता है। उसने दावा किया कि वह मनोज को भी आसानी से इसमें शामिल करा सकती है और मनोज कुछ ही दिनों में 15–20% तक का लाभ कमा सकते हैं।

जब कोई व्यक्ति भरोसे के साथ लगातार संपर्क बनाए रखता है, तो दूसरे के मन में

संदेह कम हो जाता है। यही मनोविज्ञान ठग अच्छी तरह समझते हैं, और ठीक यही माही ने किया। उसने मनोज से कहा कि ऑनलाइन स्टोर में आने वाले ऑर्डरों की पेमेंट पहले करनी पड़ती है, डिलीवरी पूरी होने पर वही पैसा वॉलेट में वापस आ जाता है, साथ ही मुनाफा भी मिलता है। इतना सुनकर मनोज को यह कारोबार सही लगा, क्योंकि 'रीचार्ज करके कमाई' वाला यह मॉडल सोशल मीडिया पर पहले भी कई बार वायरल हो चुका है।

फिर एक दिन 'माही' ने मनोज को एक लिंक भेजा और उन्हें अपना ऑनलाइन स्टोर शुरू करने के लिए प्रेरित किया। मनोज ने संदेह नहीं किया, लिंक खोला और ऑर्डर आने शुरू हुए। हर ऑर्डर की पेमेंट वे खुद करते गए—शुरुआत में कुछ हजार, फिर लाखों। यहां तक कि एक मौके पर जब उनके पास पैसे कम पड़ गए, तो महिला ने खुद मदद का नाटक किया और कुछ राशि भेजकर उनका भरोसा और मजबूत बना दिया। यह साइबर ठगी का सबसे खतरनाक हिस्सा होता है—ठग पहले छोटा-सा फायदा दिखाकर व्यक्ति को जाल में पूरी तरह फंसा लेते हैं।

कुछ ही हफ्तों में मनोज ने 60 लाख रुपये तक स्टोर में जमा कर दिए। वे हर बार यह सोचकर भुगतान करते गए कि पूरा पैसा वॉलेट में वापस आएगा और मुनाफा अलग मिलेगा। लेकिन हकीकत कुछ और थी—यह ऑनलाइन स्टोर असल में ठगों का जाल था। जब पेमेंट वापस नहीं आया, वॉलेट बंद हो गया और लिंक काम करना बंद कर गया, तब जाकर मनोज को एहसास हुआ कि वे किसी सुनियोजित धोखाधड़ी का शिकार बन चुके हैं।

मनोज ने तुरंत साइबर क्राइम थाने में शिकायत दर्ज कराई, जिसके बाद अपर पुलिस उपायुक्त (साइबर क्राइम) शैव्या गोयल ने बताया कि यह पूरा मामला ऑनलाइन फ्रॉड का है और इसमें शामिल खातों, लिंक, मोबाइल नंबरों और चैट की मदद से तकनीकी जांच की जा रही है। पुलिस का कहना है कि ऐसे मामलों में ठग कई देशों में फैले नेटवर्क का उपयोग करते हैं, जिससे जांच समय लेती है, लेकिन टीम लगातार प्रयास कर रही है।

इस घटना के बाद पुलिस ने लोगों को चेतावनी दी है कि सोशल मीडिया पर अनजान लोगों की प्रोफ़ाइल पर भरोसा न करें, खासकर जब बात पैसों, निवेश या आसान कमाई की हो। हर निवेश से पहले उसकी सत्यता की पूरी जांच आवश्यक है, क्योंकि ऑनलाइन फ्रॉड का हर नया तरीका पहले से ज़्यादा चालाक और विश्वास दिलाने वाला होता है।

मनोज नेहरा की यह घटना एक कठोर सबक की तरह है—डिजिटल दुनिया में एक क्लिक इंसान को नई ऊँचाइयाँ दे सकता है, लेकिन वही क्लिक किसी को कंगाल भी बना सकता है। इसलिए अनजान दोस्ती, त्वरित मुनाफा और चमकदार ऑफ़र हमेशा सावधानी के साथ ही स्वीकार करने चाहिए, वरना 60 लाख जैसी भारी कीमत चुकानी पड़ सकती है।

लखनऊ को मिले दो नए राजमार्गों का तोहफ़ा, अब सीतापुर एक घंटे में और काशी ढाई घंटे में

(जीएनएस)। लखनऊ अब उत्तर प्रदेश की नई कनेक्टिविटी क्रांति का केंद्र बनने जा रहा है। वर्षों से ट्रैफिक की मार झेल रहे दो बड़े राष्ट्रीय राजमार्ग—लखनऊ-वाराणसी हाईवे और लखनऊ-सीतापुर रोड—अब पूरी तरह बदलने वाले हैं। राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण ने इन दोनों सड़कों को चार लेन से बढ़ाकर छह लेन बनाने की दिशा में तेजी से कदम बढ़ा दिए हैं। कुल मिलाकर करीब दस हजार करोड़ रुपये से अधिक की लागत वाली ये परियोजनाएँ न सिर्फ यात्रा समय कम करेंगी, बल्कि धार्मिक पर्यटन, औद्योगिक विकास और तराई क्षेत्र की आवाजाही को नई रफ्तार देंगी। लखनऊ से वाराणसी का सफर हमेशा से यात्रियों के लिए समयसाध्य रहा है। लगभग पाँच घंटे की दूरी तय करने में कई बार खराब सड़क, बढ़ते वाहन और संकरे हिस्से परेशान करते रहे हैं। लेकिन अब एनएच-731 की 295 किलोमीटर लंबी सड़क को छह लेन में तब्दील करने का फैसला इस पूरी तस्वीर को बदल देगा। अक्टूबर 2025 से इसके सर्वेक्षण की शुरुआत हो चुकी है और डीपीआर लगभग अंतिम चरण में है। नवंबर 2025 तक जमीन अधिग्रहण की प्रक्रिया भी तेजी से आगे बढ़ चुकी है। इस परियोजना पर 9,500 करोड़ रुपये खर्च होंगे और 2026 में निर्माण कार्य शुरू होकर 2028 तक पूरा करने का लक्ष्य तय किया गया है। हाईवे विकसित होने के बाद लखनऊ से काशी की दूरी मात्र ढाई से तीन घंटे में नापी जा सकेगी, जिससे धार्मिक नगरी वाराणसी तक पहुंचना पहले से कहीं आसान हो जाएगा। इसके साथ ही यह मार्ग पूर्वांचल एक्सप्रेसवे को भी मजबूती देगा और क्षेत्र के उद्योगों के लिए नए दरवाज़े खोलेगा। साथ ही लखनऊ-सीतापुर रोड यानी एनएच-24 के चौड़ीकरण की योजना भी इस बदलाव को और महत्वपूर्ण बना देती है। यह 90 किलोमीटर लंबा मार्ग रोजाना लगभग चालीस हजार वाहनों का बोझ उठाता है, जिसके चलते ट्रैफिक जाम आम बात हो चुकी है।

भारत के वस्त्र उद्योग को नई रफ़्तार देने वाली 305 करोड़ की टेक्स–रैम्प्स योजना को मंजूरी

(जीएनएस)। भारत के वस्त्र उद्योग को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए और अधिक मजबूत, आधुनिक व नवाचारी बनाने की दिशा में केंद्र सरकार ने एक बड़ा कदम उठाते हुए 305 करोड़ रुपये की 'टेक्स–रैम्प्स' योजना को मंजूरी दे दी है। यह योजना पूरी तरह केंद्र द्वारा वित्तपोषित होगी और इसे आगामी वित्त आयोग चक्र तक लागू किया जाएगा। सरकार का उद्देश्य स्पष्ट है—भारतीय टेक्सटाइल सेक्टर को तकनीक, शोध, विश्लेषण और नवाचार के सहारे एक नए युग में प्रवेश दिलाना, जहाँ भारतीय वस्त्र दुनिया के हर विकसित बाजार से टक्कर ले सकें।

योजना की घोषणा करते हुए केंद्रीय वस्त्र मंत्री गिरिराज सिंह ने कहा कि टेक्स–रैम्प्स भारतीय वस्त्र उद्योग को 'फ्यूचर–रेडी' बनाने के लिए बनाई गई एक व्यापक पहल है। उनका कहना है कि यह योजना रिसर्च, डेटा-आधारित नीति निर्माण और नवाचार को जोड़कर टेक्सटाइल क्षेत्र को एक सुव्यवस्थित और वैज्ञानिक आधार पर आगे बढ़ाएगी। लंबे समय से उद्योग जगत जिस संरचनात्मक बदलाव का इंतजार कर रहा था, टेक्स–रैम्प्स उसी दिशा में निर्णायक कदम के रूप में देखा जा रहा है।

योजना के अंतर्गत स्मार्ट टेक्सटाइल, पर्यावरण-अनुकूल उत्पादन तकनीकें, नई उभरती मैन्युफैक्चरिंग पद्धतियाँ और उत्पादन दक्षता बढ़ाने के लिए उन्नत अनुसंधान को प्राथमिकता दी जाएगी। कपड़ा मंत्रालय के अनुसार, देश में पहली बार वस्त्र क्षेत्र के लिए इतने बड़े पैमाने पर एक संयुक्त डेटा संरचना बनाई जाएगी, जिसमें रोजगार आकलन, सप्लाई चेन मैपिंग से लेकर उपभोक्ताओं के आकार और पसंद को समझने के लिए 'इंडिया–साइज़' स्टडी जैसे महत्वपूर्ण तत्व शामिल होंगे। यह डेटा-ड्रिवन ढांचा भविष्य की नीतियों को अधिक सटीक, व्यावहारिक और तेज़ बनाकर उद्योग के विकास को नई दिशा देगा।

केवल शोध या डेटा तक ही यह योजना सीमित नहीं रहने वाली, बल्कि उद्योग की वास्तविक समय में निगरानी, उसकी स्थिति का आकलन और रणनीतिक निर्णय लेने के लिए एक अत्याधुनिक केंद्रीकृत डिजिटल प्लेटफॉर्म तैयार किया जाएगा। इससे छोटे–बड़े सभी उद्योगों को समान रूप से लाभ मिलने की संभावना है। सरकार का यह भी मानना है कि राज्यों में परियोजना निर्माण को मजबूत करना, क्षमता विकास के लिए कार्यशालाएँ आयोजित करना और क्षेत्रीय कार्यक्रमों के माध्यम से उद्योग जगत को आधुनिक तकनीक के अनुकूल तैयार करना इस योजना के महत्वपूर्ण स्तंभ होंगे।

टेक्स–रैम्प्स योजना का एक और अहम उद्देश्य देश में उच्च मूल्य वाले टेक्सटाइल स्टार्ट–अप्स को बढ़ावा देना है। इसके लिए इनक्यूबेशन केंद्र, हैकथॉन, और शैक्षणिक संस्थानों व उद्योग जगत के बीच साझेदारी को मजबूत किया जाएगा। सरकार का मानना है कि यदि वस्त्र उद्योग में नवाचार की संस्कृति विकसित की गई, तो भारत न केवल वैश्विक बाजारों में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाएगा, बल्कि घरेलू स्तर पर भी लाखों नए रोजगार अवसर पैदा होंगे।

विशेषज्ञों का अनुमान है कि यह योजना भारत के टेक्सटाइल सेक्टर को सिर्फ मजबूत ही नहीं करेगी, बल्कि उसे दुनिया के उन देशों की बराबरी में खड़ा करेगी जो अभी तक अंतरराष्ट्रीय बाजार में प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं। इसके साथ ही केंद्र, राज्य सरकारों, उद्योग संगठनों और शिक्षण संस्थानों के बीच तालमेल भी गहरा होगा, जिससे यह क्षेत्र आने वाले वर्षों में बहुआयामी विकास देख सकेगा।

कपड़ा मंत्रालय का कहना है कि टेक्स–रैम्प्स योजना भारत को एक मजबूत, टिकाऊ और विश्वस्तरीय टेक्सटाइल हब के रूप में स्थापित करने की दिशा में उठाया गया बड़ा और महत्वपूर्ण कदम है। इससे न केवल उद्योग का वर्तमान सुधरेगा, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक ऐसा तंत्र तैयार होगा जो भारतीय वस्त्रों को नवाचार, गुणवत्ता और आधुनिक तकनीक के क्षेत्र में नए मुकाम तक ले जाएगा।

विदेशों में संपत्ति छिपाना अब पड़ेगा महंगा, आयकर विभाग ने शुरू किया सख्त 'एनयूडीजीई-2', दिसंबर तक मिलेगा मौका

(जीएनएस)। देश में टैक्स चोरी पर लगाम कसने की दिशा में आयकर विभाग ने एक और निर्णायक कदम उठाया है। विदेशों में संपत्ति और आय छुपाकर कर से बचने वालों पर जल्द ही शिकंजा कसने वाला नया अभियान शुरू हो गया है, जिसकी घोषणा करते ही वित्तीय जगत में हलचल बढ़ गई है। केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड यानी सीबीडीटी ने स्पष्ट कर दिया है कि अब विदेशी परिसंपत्तियों की जानकारी छुपाना लंबे समय तक संभव नहीं होगा, क्योंकि सरकार के पास दुनिया भर से डाटा आने लगा है और हर आंकड़ा सटीक तरीके से जांचा जा रहा है। इसी उद्देश्य के लिए 'एनयूडीजीई' पहल का दूसरा चरण शुरू किया गया है, जिसके तहत कर विभाग उन व्यक्तियों तक सीधे पहुंचेगा जिन्होंने अपनी आयकर रिटर्न में विदेशी खातों, निवेश या आय के पूरे विवरण नहीं दिए हैं।

वित्त मंत्रालय का कहना है कि इस अभियान के तहत मूल्यांकन वर्ष 2025-26 के लिए ऐसे हजारों रिटर्न चिन्हित किए

जा चुके हैं जिनमें विदेशी संपत्तियों या विदेशी स्रोतों से प्राप्त आय का खुलासा अधूरा है। 28 नवंबर से विभाग इन करदाताओं को एसएमएस और ई-मेल भेजना शुरू करेगा, जिसमें उन्हें बताया जाएगा कि उनकी फाइल जांच के दायरे में है और यदि वे संभावित दंड और कार्रवाई से बचना चाहते हैं तो 31 दिसंबर 2025 तक संशोधित आयकर रिटर्न दाखिल कर दें। यह समय सीमा इसलिए तय की गई है ताकि करदाता स्वैच्छिक रूप से अपनी गलतियों को सुधार सकें और विभाग को भी पारदर्शिता बढ़ाने का लक्ष्य हासिल हो सके।

विदेशी संपत्तियों की जानकारी पकड़ने के लिए सरकार के पास अब अत्याधुनिक वैश्विक सूचना प्रणाली उपलब्ध है। कॉमन रिपोर्टिंग स्टैंडर्ड (सीआरएस) के तहत कई देशों के वित्तीय संस्थान भारत को खातों और निवेश की जानकारी भेजते हैं, जबकि अमेरिका का FATCA सिस्टम भी भारतीय नागरिकों के विदेशी वित्तीय व्यवहार से जुड़े महत्वपूर्ण डेटा साझा करता है। इन दोनों स्रोतों से प्राप्त आंकड़ों का मिलान आयकर रिटर्न से किया जाता है और जहां भी विसंगतियां मिलती हैं, वहां एनयूडीजीई पहल के तहत करदाता को संदेश भेजा जाता है। विभाग का यह भी कहना है कि इस कदम का उद्देश्य दंड देना नहीं, बल्कि रिटर्न में विदेशी परिसंपत्तियों और विदेशी आय से जुड़े हिस्सों में सही और पूर्ण खुलासा सुनिश्चित करना है। आयकर अधिनियम, 1961 और काला धन अधिनियम, 2015 स्पष्ट रूप से यह अनिवार्य करते हैं कि देश के बाहर रखी गई संपत्तियों और आय की जानकारी करदाता को देनी ही होगी।

दिलचस्प बात यह है कि एनयूडीजीई के पहले चरण के परिणाम बहुत सफल रहे थे। पिछले वर्ष जब विभाग ने ऐसे करदाताओं को संदेश भेजे थे जिन्होंने विदेशी खातों और निवेश की जानकारी छुपाई थी, तब 24,678 लोगों ने अपनी रिटर्न संशोधित की थी और 29,208 करोड़ रुपये की विदेशी परिसंपत्तियों तथा 1,089.88 करोड़ रुपये की विदेशी आय का खुलासा किया था। यह आंकड़े बताते हैं कि दुनिया भर में मौजूद भारतीयों की वित्तीय गतिविधियां अब पूरी तरह पारदर्शिता के दायरे में आने लगी हैं। केंद्र सरकार को उम्मीद है कि दूसरे चरण की शुरुआत से विदेशी संपत्ति छुपाने वालों पर और अधिक नियंत्रण होगा, कर व्यवस्था में विश्वास बढ़ेगा और राजस्व भी मजबूत होगा।

नई पहल के साथ सरकार का इरादा साफ है—करदाताओं को सहयोग का मौका देना, लेकिन जानबूझकर जानकारी छुपाने वालों को किसी भी स्थिति में राहत न देना। यह अभियान आने वाले महीनों में न केवल टैक्स सिस्टम को मजबूत करेगा, बल्कि यह संदेश भी देगा कि वैश्विक स्तर पर अब कोई वित्तीय गतिविधि छुपी नहीं रह सकती।

जिला स्तरीय गीता महोत्सव का आयोजन 1 दिसंबर को

- संस्कृत के प्रचार-प्रसार और संवर्धन के लिए मुख्यमंत्री के नेतृत्व में शुरू की गई 'योजना पंचकम्'
- राज्य के 34 स्थानों पर प्रतिभागी गीता के श्लोक और संस्कृति सुभाषितों का पारायण करेंगे, भगवद् गीता पर व्याख्यान और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का होगा आयोजन

(जीएनएस)। गांधीनगर : राज्य में संस्कृत भाषा और साहित्य के व्यापक प्रचार-प्रसार के माध्यम से प्राचीन भाषा संस्कृत को प्रोत्साहन देने और उसके संवर्धन के लिए मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में गुजरात राज्य संस्कृत बोर्ड ने 'योजना पंचकम्' शुरू की है।

'योजना पंचकम्' में संस्कृत सप्ताह महोत्सव योजना, संस्कृत संवर्धन सहायता योजना, संस्कृत प्रोत्साहन योजना, श्रीमद् भगवद् गीता योजना और शत सुभाषित कंठपाठ योजना का समावेश किया गया है। इनमें से भगवद् गीता योजना और शत सुभाषित कंठ पाठ योजना के तहत प्रतिभागियों को जिला स्तरीय कार्यक्रम में सम्मानित किया जाएगा।

1 दिसंबर, 2025 को गीता जयंती के अवसर पर राज्य में जिला स्तर पर 34 स्थानों पर जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय की ओर से इन योजनाओं के अंतर्गत विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए जाएंगे। इसके अलावा, श्रीमद् भगवद् गीता के अध्याय 12 और 15 का सामूहिक पारायण, लोगों के लिए संस्कृत प्रदर्शनी, भगवद् गीता पर व्याख्यान सहित कई कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

आगामी समय में राज्य स्तरीय कार्यक्रम के लिए विश्वविद्यालय स्तर पर संपूर्ण गीता कंठ पाठ योजना की समीक्षा की जाएगी। समीक्षा के दौरान श्रीमद् भगवद् गीता योजना और शत सुभाषित कंठ पाठ योजना में हिस्सा लेने वाले प्रतिभागियों के श्लोकों के उच्चारण और कंठ पाठ संबंधित श्लोकों के लय-छंद, उच्चारण की शुद्धता और कंठ पाठ की दक्षता के साथ ही भाव-भक्ति और आत्मविश्वास युक्त प्रस्तुति की समीक्षा की जाती है।